॥ श्रीः ॥
आनन्द सागर
संग्रहकर्ता–हरिनाथ व्यास।
प्रकाशक–
मैनेजर–भार्गव पुस्तकालय, काशी।
भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित।
मूल्य ≈)

* श्रीः *

आनन्द सागर की विषयानुक्रमणिका ।

* श्रीः *

आनन्द सागर

॥ दोहा ॥

गणपति गौरि मनाय के, हिय धरि शारद ध्यान ।
आनन्द सागर संग्रह करूं, करौ कृपा जन जान ॥

॥ रागिनी भैरवी ॥

गणपति विघन विनाशन हारे ॥ टेक ॥
लंबोदर पीताम्बर सोहे फणिमणि मुकुट नयन रतनारे ।
गजमणि माल गले बिच सोहै भाल लाल में चन्द्र कलारे ॥
मोदक लेत देत जननी जब ठुमुक चलत नूपुर भनकारे ।
रिद्धि सिद्धि दोउ चमर ढुरावत सुर समूह लखि होत सुखारे ॥
उठि प्रभात गिरिजा सुत सुमिरे दुख दारिद्र न आवत द्वारे ।
देविसहाय बसैं आनन्दबन यह वर देहु महेश दुलारे ॥ १ ॥

॥ राग धनाश्री ॥

बंसी एक दिनवां ऐसी श्याम बजाई ॥ ध्रू० ॥
मोहैं शेष सकल सुर नर मुनि गगन बदरिया छाई ॥
रवि रथ अटकि रहा मण्डल में शिव जी के ध्यान छुटि जाई ॥बंसी॥१॥
गौअन बनहिं चारा तृण त्यागे बछरू छीर तजि धाये ॥
बैठे विहंग रहे तरुवर पर फल तोर मुखहूं न खाई ॥बंसी ॥ २ ॥
पुष्प विमान गिरे धरणी में बन रिपु गए भुताई ॥
यमुना नीर थीर भौ सुनिके पवन गिरे मुरझाई ॥ बंसी० ॥३ ॥

विकल भई वृषभान नन्दिनी पांव पियादे धाई ॥
सूरश्याम प्रभु अद्भुत लीला कहँ लौं कहब मैं गाई ॥ वंशी० ॥ ४ ॥

॥ भजन ॥

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कञ्जारुणं ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरं ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द दशरथ नन्दनं ॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारअंग विभूषणं ।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं ।
मम हृदय कंजनिवास करि कामादि खल दल गंजनं ॥

॥ राग पीलू ॥

माई बनसे गोविन्द आवत री ॥ ध्रु ॥
आगे आगे गोविन्द पाछे पाछे राधिका ।
बंशी के शब्द सुनावत री ॥ माई० ॥ १ ॥
श्रीवृन्दावन की कुञ्ज गलिन में ।
गोपी ग्वाल नचावत री ॥ माई० ॥ २ ॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरशको ।
जननी आस लगावत री ॥ माई ॥ ३ ॥

राग ईमन या भैरो ।

तान्डव गति मुन्डन पर निरतत बनवारी ॥
रुन २ पग नूपुर धुन झुन २ पैजनिपग ।

ठुम २ ठुमकि चलत किंकिणि धुनिप्यारी ॥ ता० ॥ १ ॥
पं २ पग पटकत फं २ फनन ऊपर ।
बिन २ बिनति करत नागवधु हारी ॥ ता० ॥ २ ॥
सं २ सनकादिक नं २ नारदादि ।
गं २ गधर्व सकल देत मुदित तारी ॥ ता० ॥ ३ ॥
ब २ बरस सुमन द २ देव सकल ।
स २ सूरदास बलि २ बलिहारी ॥ ता० ॥ ४ ॥

॥ राग बिहाग वा अलैया ॥

मोहिं यहर अचंभा लागे। नाथ कैसे गजके फंद छुड़ाये॥ध्रु०॥
गज औ ग्राह लड़ें जल भीतर शरण शरण गोहराये ।
ग्राह मारि गजराज उबारे जल में बुड़न नहिं पाये॥नाथ कैसे०॥१॥
भिलनी के बेर सुदामा के तंदुल रुचि करि भोग लगाये ।
दुर्योधन गृह मेवा त्यागे साग बिदुर गृह खाये॥ नाथ कैसे०॥२॥
शनि द्रोपदी पुकारे लाज से प्रभु द्वारिका से आये ।
अम्बर बाढ़ अवारन छाई नग्न होवन ते बचाये ॥ नाथ कैसे०॥३॥
तुम प्रभु मात पिता हो मेरे मैं बालक गुण गाये ।
तुलसिदास प्रभु तुम्हरे दरशको चरणन पै चित लाये॥नाथकैसे०।४

॥ मलार ॥

घन आवैरी झुमझूम आनन्दवन वीथिन बरसै ।
कंचन भवन महेश उमाके अति उतंग नभ परसै ॥
विश्वनाथ पद पंकज पूजे पाप पुरातन झरसै ।
देवीसहायको देहु दरश शिव बिन दरशन जन तरसै ॥

॥ कीर्तन ॥

शिव कहो शम्भु कहो शिवापति ईश कहो, गौरीनाथ शंकर

को सुमिरत रहुरे। हर कहो शूली कहो मनमें महेश कहो, काशी विश्वनाथ कहो केते सुख लहुरे॥ गिरिको विहारी कहो गंगा शीसधारी कहो, विषको अहारी कहो यहि गाढे गहुरे। काशीजी को वासी कहो सुख को निवासी कहो, तीनों ताप नासी अवि॰ासी क्यों न कहुरे॥

॥ छंद ॥

हे दीनबन्धु दयाल शङ्कर जानि जन अपनाइये।
भवधार पार उतार मोकों निज समीप बसाइये॥
जाने अजाने पाप मेरे आप तिनहिं नसाइये।
कर जोर२ निहोर माँगौ बेगि दरश दिखाइये॥
देवीसहाय सुनाय शिव को प्रेम सहित जे गावहीं।
जगयोनि से छुटिजायं ते नर सदा अति सुख पावहीं।

॥ दोहा ॥

बार बार बिनती करौं, धरौं चरण पर माथ।
निजपद भक्ति भाव मोहिं, देहु उमापति नाथ॥
गुरु चरणन शिर नाय के, बिनवत दोउ करजोर।
शिव शङ्कर के चरण में, लगो रहे मन मोर॥
भजन करो भोजन करो, गावो ताल तरंग।
निसदिन लौ लागी रहे, पारवती शिव संग॥

॥ दादरा ॥

मलिनियां रसीली झूमत आवै। हाथ लिये फूलन की डलिया, कमर बल खावे॥ झूमत आवै मलिनियां० ॥१॥ बांकी नजरिया गजब करि डारै, जिया ललचावै॥ झूमत आवै० ॥२॥ जोबन नवल कसे अंगिया में, झलक दिखलावे॥ झूमत०॥३॥ मुन्नीलाल अचल मदमाते, नाहक तरसावै॥ झूमत आवै०॥४॥

॥ ठुमरी ॥

राधा मेरी गेंद चुराई हम देखी तुम पाई ॥ राधा० ॥ १ ॥
ठुनगत ठुनगत गै तुमहीं लग हम जानी तुम पाई ॥ राधा० ॥ २ ॥
हाथडार अँगिया बिच देखो एक गई दुइ पाई ॥ राधा० ॥ ३ ॥

॥ ठुमरी काफी ॥

मेरा साँवलिया सा मोहन प्यारा ।
कुंजन में गोपिन में लूटि लूटि दधि माखन खावै, सखन लुटावै मीठी बाँसुरी बजावै, गावै राग रागनी सारा ॥ मेरा० ॥
सुर मुनि हितकारी जाको जपै त्रिपुरारी कंस निकन्दन देवकि नन्दन राम दासको साई, लीन्हा भक्तहित अवतारा ॥ बृजमें कीन्हा बिविध बिहारा ॥ मेरा सांवलिया सा मोहन प्यारा ॥

॥ सोहनी ॥

मैं वारी मैं वारी नबीजी ।
आज बधावो बाजत साजन घर ॥ मैं वारी० ॥ नबी की मंडैया पानन छाई फुलवन सेज बिछाई नबीजी ॥ मैं वारी० ॥
नबी और अली दोनों झूमत आवैं आवन की बलिहारी नबी जी ॥ मैं वारी नबी जी ॥ एक सखी दूजे संग की सहेली भई है सुहागिनी प्यारी नबीजी ॥ आज बधावो बाजत० ॥

॥ सोहनी ॥

ऐसे में कोई घरसे ना निकसे तुमहीं अनोखे विदेश जवैया।
पैर धरन को ठौर नहीं है भरि आये नदिया नार तलैया ॥
ऐसे में कोई घर से ना० ॥

॥ दादरा ॥

मोरे राजा केवड़िया खोलो रसके बूंदापड़ें ।

रिम झिम रिम झिममेघ बरसिरह्यो आईघटाघनघोर रसके बूंदा पड़े॥ मोरे राजा०॥बाला जोवनवा भीजेमोरा सैंया अबना मोसेमुखमोड़ रस के बूंदापड़े ॥ मोरे राजा० ॥

॥ बहार ॥

को बरनै छवि आज राम की ।
रतनसिंहासनबैठेहैंरामलछिमनबीचमेंसोहैंमातुजानकी । कोवरनै नरनारी सगरे जुरि आये भुलि गये सुधि अपने धम की ॥ कोबरनै भरत शत्रुहन चमर डुलावै करत बड़ाई हनुमान की ॥ को बरनै तुलसीदास भजो भगवानहि देहुदरश मोहिं आनकी॥ कोबरनैछवि आज राम की ॥

॥ दादराथियेटर ॥

मनाय लाओ जाओ सौतन संग सैंयाँ
मै लागूं तोरी पैयाँ डालूं गले बहियां ॥ मनाय लाओ० ॥
कहना हम दम से मुझे शक्ल दिखावैं तो ज़रा
दारुये वस्ल का बिस्मिल को पिलावैं तो ज़रा ॥
इन्तजारी में सनम अब न रुलावैं तो ज़रा ।
दिलो जां से हुइ कुरबान हां आवैं तो ज़रा ॥ मनाय लाओ०

॥ थियेटर ॥

नाचैं गावैं नारि पियारी चलो वारी वारी जाव । हम जावें बलिहारी पियारी चलो ॥ नाचैं० ॥ बाग में फल फूले प्यारी मैं वारी हरसू है बागे बहारी की धूम धूम देखो गुलों की शान सैर चमन गुल है मगन ये है सोहना । लाला गुलाला मतवाला है आला । पियारी चलो वारी २ जावें नाचैं गावैं ॥

॥ होली राग पीलू ॥

भरि पिचकारी मुखपर मारी। भीजगई बन सारी रे॥ भरि॥१॥

भिज गई मोरी सुरुख चुनरिया । सारी लाख हजारी रे ॥भरि॥२॥
बरजों कान्हा बरजो नहिं माने । हमसे करत पथरारी रे॥भरी॥३॥
सूरदास गति कहँलों बरनों हरि के चरण बलिहारी रे॥ भरि०॥४॥

॥ होली ॥

ऐसो चटक रंग डारो श्याम मोरी चुनरी में परगयो दागरी ॥ अँगुरी नचावत सैन चलावत मोहीं सों वासो लागरी ॥ मोसी अनेक सुघर या बृजमें उनहीं सों खेलो फागरी । रामदास बृज बसिबो त्यागो ऐसी होरी में लागै आगरी ॥ ऐसो चटकरंग० ॥

॥ होली ॥

नद नंदन सांवरो खेलत ब्रज में होरी ॥ ध्रू० ॥ मोर पंख को मोर बनो है ब्रज बनिता शिर मौरी । बनो हैं ब्याह बंशीधर वरको ॥ राधा दुलहिन बनोरी ॥ नन्दनंदन० ॥ १ ॥ आँख आँज मुख मान बदन पर तिलक दिये शिर रोरी । परबश होय वृषभान सुता लिये गैंठी गोलिय जोरी ॥ नन्द नंदन० ॥ २ ॥ तारी दै गारी सब गावैं चरचा चाँचर होरी। दें फगुवा अगुवा मनमोहन, जत वृषभान किशोरी॥ नंदनदनं०॥ ३। बृन्दावनकी कुंजगलिन में सखियन खेलत होरी । चले निछुटाय सूरश्याम से सब सखि वर माँगोरी ॥ नंदनंदन० ॥ ४ ॥

॥ नारदी गौरी रागिनी जलद ताल ॥

प्यारी दीजे गेंद हमारी । पूछत श्री मिथिलेश सुतासे रघुवर अवध बिहारी ॥ खेलत रहे एक संग मिलिके जो निज सखी तिहारी । तिन अंचल पटओट छिपायो कीजे खोज पुछारी ॥ हा हा करत खड़े रघुनन्दन सखन प्रमोद मँझारी । श्याम सखे सिय गेंद दिखाये सखिन बजायो तारी॥ प्यारी दीजे गेंद हमारी ॥

॥ ध्रुपद धनाश्री राग चारिताल ॥

सिसिरि सफूल रचे हीरन के कोर खचे सिरस फूले जामा जोड़ा जुल्फ कुटिल सोहै। खड़े सोभ श्रवन बटे सिरिस फूल सेज पटे धरे कमल कोमल कर प्यारी गर मोहै॥ आस पास मधुर सखा चन्द्रकला विमलकला फूलन के धनुष बान कर कर कमलो हैं। श्याम सखे विहँसि देत अर्घपानि बहुरि लेत हेतु हरखि हिय समात चितवत तिरछोहैं॥

॥ भैरवी धुन ठुमरी ॥

जबही हरि सारँग धारं। प्रथम टकोर घोर सुनि निश्चर बधिर भये एक बारं॥ दलमलि दलित लंक भहराने प्रतिमा श्रवहिं अपारं। अंचल रोपि मदोदरि रानी विनय करति बहुवारं॥ जो पति कहा मोर तुम मानों रह अहिवात हमारं। आदर सिय को चढ़ाय पालकी तुम उर मेलि कुठारं॥ भेंटत तुमहिं अभै करि देहैं कोमल चित्त उदारं। इतना सुनि दशभाल रिसान्यो नारि शुभाव तुम्हारं॥ कहं एक नाथ मनुज मोहिंमारे धृग जीवन संसारं। देखी बीर तुम्हारो हमौ कछु विदित भुवन दश चारं॥ जब बलि बांधि सहस भुज मारे सोरी नारि निकारं। कहँ लगि कहौं राम प्रभुताई तुं अघ अजस अपारं॥ श्याम सखे भल मोर सिखावन सरन गये निस्तारं॥

॥ भैरवी ॥

सोचना करा रे मनमें भोला देने वाला है॥ टेक॥ गौरी अरधंगा जाके भंगा को अहारा है। हाथमें पिनाक लीन्हें सोई बैल वाला है। सोचना करोरे॥ गोरो सो शरीर जाको और कंठ काला है। सोई अवधूत मेरो मोहि तिपाला है॥ सोचना

करोर०॥ महा विषपान कीन्हे नैन जाके लाला है। दुष्टन के नासिबे को तीजे नैन ज्वाला है॥ सोचना करोरे०॥ देवी को सहाय तेरो सेवक निराला है। वोही मेरा स्वामी जाके गले मुण्डमाला है॥ सोचना करोरे मनमें०॥

॥ आसावरी ॥

झुकि झुकि झमकि कदंब विटप तर सखि सियावर झूले॥ ॥ टेक॥ जन दुख दमनी मन प्रिय पूरणी श्री सरयूकूले॥१॥ बन प्रमोद उर मोद देन सखि नाना तरु फूले। चन्दन चम्पक कुन्द चमेली सखि रति पति भूले॥२॥ गुलाबांस गुलाब कदंब सुगंधे सुर तरु नहिं तूले। उमड़ि उमड़ि घन गरजत सुन्दर बरषत अनुकूले॥ ३॥ मणिन झड़ित वर कनक हिंडोले झूलत मन फूले। कुसुम सिंगार कलित श्री सियपिय हंसत अधर मूले॥४॥ गाय झुलावे झमकि झुकि सजनी लखि मुनि मन डूले। उर आनन्द भरीं सब सजनी सुधि बुधि सब भूले॥५॥ को वर्णे छवि छवि परे सजनी नहिं त्रिभुवन तूले। रामनारायण स्वामि श्यामरो सबके मन तूले॥ ६॥

॥ सारंग ॥

जगत जगत जगत जननि जनक नन्दनी॥ध्रु०।
परसत चरणारविन्द हरत सकल दुःख द्वन्द।
नाशत मन मन्द फन्द वेद वंदनी॥ जगत ज०॥१॥
रुचिर मोति माल जाल राजित छवि अति विशाल।
यंत्र ज्योति होति चपल द्रवत गंजनी॥ जगतज०॥२॥
कर्ण फूल देखि भूल जन्म मरण हरण शूल।
अलक झलक मधुकर छबि कोटि भंजनी॥ जगतज०॥३॥

तुलसि दास अति हुलास चाहत तोहि चरण वास ।
नाश त्रास पूज आस राम रंजनी ॥ जगत ३०॥४॥

॥ धनाश्री ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी ।
तुमसे कहा छिपी करुणानिधि तुम प्रभु अन्तरयामी ॥मो०॥
भरि भरि उदर विषय रस धावत जैसे शूकर ग्रामी ।
जो तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥मो० ॥१॥
जहं सतसंग होय तहं आलस विषयन संग विश्रामी ।
श्रीपति चरण छांडिके विमुखी आनकर करत गुलामी ॥मो०॥२॥
मो सम पतित अधम पर निन्दक सब पतितन में नामी ।
तुलसिदास पतितन को उधारन करिहैं श्रीपति स्वामी मो०॥३॥

॥ आसावरी ॥

निराकार निर्गुण अबिनासी सब घट में हरि छाया है ॥नि०॥
वेद कुरान पुरान अष्टदश शास्त्र किताब फरमाया है ।
पढ़ि पढ़ि मरे विचारत बते लेकिन मर्म नहिं पाया है ॥नि०१॥
कोटि तीर्थ व्रत जप तप पूजा यह सब भर्म बनाया है ।
साधे आप चिन्ह तनकदहूं झूठे घंट बजाया है ॥ नि० ॥२॥
ज्यों ईश्वर मूरति मह बैठे तब क्यों बाहर खोजना है ।
जो बाहर भीतर कोकदहूं बादिहिं जन्म गँवाया है ॥ नि०॥३॥
मन अस्थिर थीर करि बैठो ज्ञान गगिबि हटाया है ।
रामरूपदास बिचारि कहत यह पावत जेहि उर दायाहै॥नि०॥४॥

॥ केदारा ॥

अरे मति मन्द भजहु यदुवीरा ॥अ०॥
पीत बसन तन श्याम सुन्दर के ।

नीलाम्बर राधे गौर शरीरा ॥ अरे० ॥१॥
देखो कपट तजि तरे हैं भजन से ।
सुपच सधन रविदास कबीरा ॥ अरे मति० ॥२॥
पांडु सुवन हरि राखे लच्छ गृह ।
द्रुपद को बढ़ायो चीरा ॥ अरे मति० ॥३॥
सुर दुर्लभ तन पाये भजन ते ।
डरत न रविसुत देखिबे पीरा ॥ अरे मति० ॥४॥
मरन चहत शठ श्वान सकारे ।
शिर पर काल लिये धनु तीरा ॥ अरे मति०॥
पुत्र मित्र परिवार सकल सुख ।
हय गज रथ दिन चार की भीरा ॥ अरे मति० ॥७॥
छाँड़ि सबै यदुनाथ चरण भजु ।
कहत पुकारि रामरूप फकीरा ॥ अरे मति० ॥७॥

॥रागिनी देश ताल धीम ॥

जानकी जब राम पुकारं ।
सून विलोकि राम लछिमन बिनु जाता रूप सवारं ॥
रेथ लंघाय उठाइ चढ़ाया दशशिर लंक सिधारं ।
रिषमुख पर्वत पर बैठे कर सुग्रीव विचारं ॥
हाय राम हरि लिये जात कोइ सिय दीन्हे पटडारं ।
इहां राम सियको नहिं देखा व्याकुल भये अपारं ॥
ढूंढत विपिन सिया कहि कहि कितगइ प्रान पियारं ।
कियो जटाई युद्ध सिया लगि विकल भए तन हारं ॥
श्याम सखे करि क्रिया जनक सम तब बैकुण्ठ सिधारं ॥

॥ जोगिया ॥

पथिक दोउ आजु आवैंगे । छन आँगन छन चहुँ दिशि ताकति जोहति हरिजी की बटिया आजु आवैंगे ॥ टूटल बसन फल गिरत सँभारति छनक हँसति फल चखिया राम पावैंगे । श्याम सखे निरखति रघुनन्दन तरिवर वोट छपायँ वेगि धावैंगे॥

॥ भीमपलास जलद ताल ॥

आजु विजै आनन्द सोहाई ।
बैठे तखत राम सिय सोहत सुरन निसान बजाई ॥
छूटे तोप तुपक जल उछले गिरिन गिरे घहराई ।
सुरकन्या सखि सखा सहित द्विज मुदित जवारि चढ़ाई ॥
श्यामसखे आनन्द विजै तिथि भक्ति निवछावरि पाई ॥

॥ भैरवी ॥

जो शिव सांब चरण मन लैहै ॥ टेक ॥
सो परिवार पवित्र होयगो कलिमल सब नसि जैहै ॥
ह्वैहै विमल विराग ज्ञान उर ओकी तपन बुझैहै ।
करिहैं कृपा जानि निज सेवक भवसागर तरि जैहै ॥
असरण शरण दीन हितकारी सो तोकों अपन है ।
दी है दृढ़ अनुराग चरण में मायो फिर न सतैहै ॥
देवीसहाय उमापति तोकों आनंद बनहि बसैहै ।
तारक मंत्र सुनाय श्रवण में आवागवन मिटैहै ॥

॥ ठुमरी ॥

शिवनाम जपो करुना करिके, कोउ ले न गयो छाती धरिके ।
शिवनाम से पाप जायजरिके, सब प्यार करें मानो घरिके ॥
धनमें धरे चित्त गये मरिके, ते प्रेत भए ममता करिके ।
देवीसहाय जपतप करिके, हम हाथ बिके गौरीपति के ॥

॥ राग बिलावल या पीलू ॥

बाजे बाजे श्याम तेरी पैजनियाँ ॥ ध्रु० ॥
यशुमति सुत को चलन सिखावति ।
अँगुरी धरावति ग्वालिनियां । बाजे २ श्याम०॥१॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल शीश बिराजै बाँकी लटकनियाँ॥
॥ बाजे २ श्याम० ॥ २ सूरदास बलिजाऊं चरण की ।
तीन लोक के हरिदनियां ॥ बाजे २ श्याम तेरी०॥

॥ राग जंगली या काफी ॥

तुम बिन कौन सहाय करेगो हे दीनन की पीर हरैया ॥ ध्र०॥
मैं अति दीन मीन ज्यों जल में परी है भँवर बिच मेरी नैया ।
सूझत नाहीं खेवनि हारो हरिबिन कौन है पारलगैया॥ तुम०
राखलियो है वृज डूबन ते हे इन्दर के मान घटैया ।
कंस मारि बसुदेव उबारे उग्रसेन के राज देवैया ॥ तुम०॥
सुखसंपति के सब कोइ साथी सुत दारा भैया और मैया ।
भीर परे कोइ तीर न आवै फेर न जगमें बात बुझैया॥तुम०॥२
सबकी बार संभार करी क्यों हमरी बार अबार लगैया ।
रामबकस नरफंद फँसो है बेगि छुडावहु कृष्ण कन्हैया॥ तुम० ॥४॥

॥ दादरा खम्माच ॥

बाँकी नजरिया लड़ाये जावो जनियाँ ॥ शैर ॥
निशां वो दो कि तुम्हारा पता लगै हमको ।
हमेशा हमसे मिलो रन्ज हो रकीबों को ॥
हंसके लग जावो गले आशिकों के बोसे दो ॥
नाज गमजे दिखाये जावो जनियां ॥
खुदा ने चाहा तो पता पता लगाऊंगा ।

शबे विसाल का सारा मजा चखाऊँगा ॥
बारगम चाह में दोगे वो सब उठाऊंगा ॥
उभरे जोबन छिपाये जाओ जनियाँ ॥ बांकी नजरिया० ॥

॥ दादरा ॥

मनिहरवा मरोरी मोरी बहियां नजरिया में ना जइहौंरे। घूंघट उलट मुख चूम्यो चपलने हंसके लड़ाई नजरिया नजरिया में ना जइहौं रे ॥ चुरियां करक गई चोलिया मसक गई लचक गई करिहइयां नजरिया में ना जइहौंरे ॥ मनिहरवा० ॥

॥ दादरा ॥

बिन देखे तुम्हारे मैं मर जाऊंगी।
तेरी एकही नजरिया से तर जाऊंगी ॥
शेर—कबाबे सीखहैं हम करवटें हरसू बदलते हैं।
जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते हैं ॥
लेके दिल कर दिया हलकान बड़ी मुश्किल है।
अब बने बैठे हैं अनजान बड़ी मुश्किल है।
बे सरो सामान बड़ी मुश्किल है।
तेरी एक ही नजरिया में तर जाऊंगी ॥

॥ दादरा ॥

छोड़ो छैला डगरिया हमारी ॥
शेर—कौनसी पड़गई आदत ए तुम्हारी मोहन।
छोड़ दो राह सुनो बात हमारी मोहन ॥
बे सबब दे रहे क्यों सैकड़ों गारी मोहन।
को सुनै अब गोहरिया हमारी ॥ छोड़ो छैला० ॥१॥

शैर—देखली खूब ढिठाई न दिखावो मोहन ।
कर चुके तंग बहुत अब न सतावो मोहन ।
शोखियों से न चपल चश्म लड़ावो मोहन ॥
मार डारै नजरिया तुम्हारी ॥ छोड़ो छैला० ॥ २ ॥
शैर—बस ना अब कलह से कुंजन की तरफ आऊंगी ।
बसकर इस ब्रज में मैं आबरू गवाऊंगी ।
जाके मुनिलाल यशोदा से यह सुनाऊँगी ।
कीन्ही अपमान मुररिया हमारी । छोड़ो छैला० ॥

॥ दादरा ॥

चले जइहौ तो राजा कसक निबही ।
भादोंमों कोऊ घरको न छोड़े तुमको पिया का ऐसै चही । चले जइहौ० ॥ १ ॥ पापी पपीहा पिया २ टेरै तेहका जतन का करिये सही ॥ चले जइहौ० ॥ दादुर मोर कोइलिया बोलै सूनी सेजरिया घरे खायरही ॥ चले जइहौ० ॥ ३ ॥

॥ दादरा ॥

जायें मिलकर गुजरिया बजरिया रे ।
दूध दही औ माखन भरके सिरपर लीन्हे गगरिया रे ।
हैं हम गोरी बैसकी थोरी जोबन माती सुन्दरिया रे ।
आवो चलो सब बेगि निकल चलौं आय न घेरै सवलिया रे ।
बृन्दावनकी कुंजगलिन में हम मदमाती गुजरिया रे । जायें० ॥

॥ दादरा ॥

मनमोहन से मोरी लगन लागी ॥
होनी जो होय सो होय हमें का लाज शरम सबरी त्यागी ॥
मन मोहन से० ॥ २ ॥ झांकी अनोखी बिलोकी दृगन मों प्रेम

प्रीत में अनुरागी । मनमोहन० ॥ ३ ॥ जन्म सुफल करिलेनैं छैन संग आजुहि भाग्य बिमल जागी ॥ मनमो० ॥ ३ ॥ मन्नीलाल नेह हरि सों किये संशय शोक सकल भागी ॥ मन मोहन से० ॥ ४ ॥

* ठुमरी *

गोरी गगरी धरे अठिलात जात । बातैं करत मुसक्यात जात ॥ गोरी० ॥ सिर पर गगरी गगरीपर करवा गल सोहे । मोतियन को हरवा, पतरी कमर बल खात जात ॥ गोरी० ॥

❋ ठुमरी ❋

जान चुनरिया लाल रँगदे ।
हा हा करत तोरी पैयाँ परत हूँ गोरी बहियाँ कारी चुरियाँ कंगन में शेरी झलक दे ॥ जान चुनरिया० ॥
आबी आसमानी ऊदी बैंजनी बसंती कुसम्मा गुलाबी बदामी सब्ज रंगनीला पीला काला ये तो बदले में लादे ॥
जान चुनरियो लाल रँगदे ॥

* ठुमरी *

तोरी मोरी मोरी तोरी ना बनेगी श्याम ॥
चलो हटो जी जावो जी वही संतन के धाम ॥ तोरी० ॥
नन्दललन मोसे छलबतियाँ कीन्ही विरची मोसे प्रीति नबीनी निपट निलज करो कपट काम तोहि प्रणाम तोहि प्रणाम तोहि प्रणाम ॥ तोरी मोरी० ॥

॥ राग भैरो ॥

मैं आधीन दीन है शंकर शरण तिहारी ॥ ध्रु० ॥
भगुपति हे कामो र जटाधर मुण्डमाल गलधारी ।

हे ईश्वर हे अलख निरंजन हे गुरु ज्ञान अपारी ॥ मैं० ॥१॥
कलिमल गरसि लियो मन मेरो कासे कहौं पुकारी।
राम बकस आरत अति याके शरण गहौं त्रिपुरारी ॥म०॥२॥

॥ राग देश ॥

श्यामने मोरी बहियाँ मरोरी ॥
ऐसो चपल भयो या ब्रज में नित उठि रार करै बरजोरी ॥
मैं पनघट जल भरन जातरही झपट लिपट सिर गागर फोरी॥
बालक वृन्द लिये संग डोलत पंथ चलै किमि गोप किशोरी।
कठिन उपाधि कहाँ लगि सहिये निशिदिन करत बहोर बहोरी।
हरि विलास घन श्याम सबल अति, हम अबला कोमल तन गोरी ॥ श्यामने मोरी० ॥

॥ राग देश ॥

गारी मति दीजो मो गरीबनी को जायो है। तेरो जो बिगारयो सोवो मोसो आन कहौ बीर मैं तो काहू बात को नहिं तरसायो है॥ दधिकी मथनियां भरी अंगना में आनधरी तोल तोल लीजो बीर जेतो जाको खायो है। सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजै न्यारे कान्हरा सपूत मैंने बडे पुण्य पायोहै ॥ १ ॥

॥ प्रभाती ॥

जग पितु मातु महेश भवानी ॥ टेक ॥
गर्भवास में मोहि बचायो सो सब सुनी कहानी।
तीनों लोक उदर में जाके कहत वेद बुध बानी ॥
तीनों देव प्रगट जेहि कीन्हें तीनों गुण की खानी ॥
जहं लग जीव चराचर जग में तहं शिव शक्ति समानी।
देविसहाय भजन शंकर को सुख समूह की खानी ॥

॥ प्रभाती ॥

हे विधि कौन करम मैं कीन्हो ॥ टेक ॥
जाते मोहिं दया निधि शंकर कर गहि दरसन दीन्हों ॥
सुनि सुनि हाल ग्वोल सवरी को उन सम मोहि न चीन्हों।
देविसहाय सदा शिव यश को कहत प्रेमरंग भीनों ॥

॥ प्रभाती ॥

अब तो मन लागि रह्यो चरण में तिहारे ॥
यात्रिक नहिं जान देत रोके रहत द्वारे।
सब पाप दूर होत पाँच बेत मारे ॥ अब तो० ॥
वृन्दावन बास छोड पुरी को सिधारे।
मौन ह्वैके बैठ रहे सिंधु के किनारे ॥ अब तो० ॥
उज्वल ज्योति जगमगाति ऊंच नीच तारे।
इन्द्रभवन सीस गंग गरुड़ खम्भ द्वारे। अब तो० ॥
सूरदास शरण आये ठाकुरजी के द्वारे ॥
अब तो मोहिं दरश देहु जगन्नाथ प्यारे। अब तो० ॥

॥ प्रभाती ॥

जागीये कृपानिधान हंसवंस रामचन्द्र जननी कहे बार २ भोर भयो प्यारे। राजिव लोचन विशाल प्रीति वापिका मराल ललित वदन ऊपर मदन कोटि वारि डारे। जागिये० ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे। मनहुं ज्ञानघन प्रकाश बीते सब भव विलास आस त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ॥ जागिये० ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुकर प्रतीत सुनहुं श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे। मनहु वेद बन्दी मुनि वृन्द सूत मागधादि बिरद

बदत जै जै जै जयति कैटभा ॥ जागिये० ॥ विकपति कमला वली चलै प्रपुञ्ज चंचरीक गुञ्जत कल कोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे । जनु विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत सब गुण तिहारे ॥ जागिये० । सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अति सपदि बाल भागे जंजाल विपुल दुख कदम्ब टारे । तुलसिदास अति अनन्द देखिकै मुखारविंद छूटे भ्रम फन्द परम मन्द दुन्दुभारे ॥ जागिये० ॥

॥ थियेटर ॥

तोसे बचन मैं तो हारी बलमा ।
हारी बलमा बलिहारी बलमा ॥ तोसे बचन० ॥
जो तुम सैंयाँ स्नान करोगे तुम्हरी बनूंगी पनिहारी बलमा ॥ तोसे० ॥
जो तुम सैंयाँ सेजिया सोवोगे तुम्हरी करूँगी ताबेदारी बलमा ॥ तोसे०
जो तुम सयाँ जावगे विदेस तो मैं मरिहौं मार कटारी बलमा ॥ तोसे० ॥
जो तुम सैंयाँ हमसे लडोगे तुम जीते हम हारी बलमा ॥ तोसे० ॥
तन मन धन तुमपर सब वारूं तुम हो कंत हजारी बलमा ॥ तोसे० ॥

॥ थियेटर ॥

देखूंगी प्यारे अब्बा का मुखड़ा ।
प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा प्यारारे, प्यारे अब्बा का मुखड़ा ॥
भूले हुये थे हमें अब तक दिलसे ।
दिल से जायगा सारा सारा सारारे, प्यारे अब्बा का मुखड़ा ॥
एक मुद्दत का टुकड़ा । देखूंगी प्यारे अब्बा का मुखड़ा ॥
रखेगा उलफत बाहम अब सब कुनबा कुनबा ।
फिरता था मारा मारा मारारे । दिल उखड़ा ही उखड़ा ॥
देखूंगी प्यारे अब्बा का मुखड़ा ॥

॥ थियेटर ॥

गोरे गोरे गालों पै श्याम मतवारा ।
प्यारा जग से न्यारा । गोरे गोरे० ॥
सुन्दर कमल मृग सारंग अंग सजावत,
चमक हरदम ऐसा गुन गावे ।
मोहें छोड न जावो पिया बिनारे,
हाँ गोरे गोरे गालों पै श्याम० ॥
प्रान गये परमात्मा.......हाँ लागे नयनन बान ।
जी तडपत है तुम बिना........दरश दिखावो आन ॥
गोरे गोरे गालों पै श्याम मतवारा ॥

॥ राग छायानट तिताला ॥

नाचत विविध गति हरि पग धरि धरि जमुना निकट तट पटि सुर वारि वारि ॥ टेक ॥ ह्तन ह्तन तोम् तह्‌ तानि तोम् ह्तनन तनन तोम् तननन कारी कारी ॥ १ ॥ धृकिट धृकिट तोम् थारिकिट धूमकिट बाजत मृदंग छुम छुमं धूमि धारि धारि मानिक नूपुर पग बाजत छुम छुम छनन छनन छम छननन कारी कारी ॥

॥ प्रभाती ॥

भोर भयो भूपति के द्वारे नौबत बाजन लागी ॥ टेक ॥
भयो कुलाहल कनक भवन में जनक नंदिनी जागी ॥ १ ॥
द्रुमन द्रुमन पंछी बन बोलै तिमिर निशाचर भागी ॥
अरुण भयो रवि किरण प्रकासी कोक शोक भय त्यागी ॥ १ ॥
अरुण शिखा धुनि करत परस्पर प्रेम प्रीति रसपागी ॥
सरजू तीर चले मजन को गुरु भूसुर वैरागी ॥ ३ ॥

दासी दोस चले दरसन को चरण कमल अनुरागी ॥
प्रथमहि जाय कमल मुख निरखे सोई कान्हर बड भागी ॥

॥ प्रभाती ॥

श्री रामानुज अवतार मनोहर सुन्दर सुभग शरीरं ॥ टेक ॥
अखिल लोक के शोक विनासन भये करुणा कर गंभीरं ॥ १ ॥
खल खंडित रणमंडित पंडित कर रुचि दंड त्रिदंडं ॥
तिलक श्रीचुरण शशि मुख झलकै कुण्डल मंडित गंडं ॥ २ ॥
अरुण भंवर धरे चरण भुजा युत सरस सुवरण उदारं ॥
शांति दांति वेदांत कांति महिमा अगम अपारं ॥ ३ ॥
तिमिर प्रचंड वितंड विखण्डन मंडन द्रविड विकासं ॥
आदि ब्रह्म सहोदर भूधर भक्ति मुक्ति प्रतिपाल विनीतं ॥ ४ ॥
शेवकराम निष्काम स्वस्तिकृत भक्ति विभूषित गीतं ॥ ५ ॥

॥ गज़ल कव्वाली ॥

फुर्कत तुम्हारी प्यारे हमको रुलारही है ।
अरु याद दिल में हरदम नस्तर चलारही है ॥
अब तो है गैर हालत बीमार की तुम्हारे ।
सूरत जरा दिखाओ जां लब पै आरही है ॥ फुरकत० ॥
बोलो चहे न बोलो कुछ गम नहीं है मुझको ।
रहमत रजांइलाही मुझको बुलारही है ॥ फुर्कत० ॥
यह रहमते दो आलम बेडा हो पार मेरा ॥
मेरे गुनह की किश्ती अब डगमगा रही है ॥ फुर्कत० ॥

॥ गज़ल कव्वाली ॥

इतना संदेसा मेरा ऊधो मोहन से कहना ।
देखन को अंखियां तरसे रो २ जमुन जल बरसे॥इतना० ॥

कुबरी जो सौत हमरी। पढि पढि के जदुआ डारी॥ इतना०॥
मैं फिरती बिरह मदमाती। जोबन बहार जाती॥ इतना०॥

॥ ग़ज़ल ॥

अदा जान लेवी है जानी तुम्हारी।
कयामत हुई है जवानी हमारी॥
फिदा तुमपै हम हैं तुम गैरों को चाहो।
ये किस्मत मेरी कद्रदानी तुम्हारी॥ अदा जान०॥
न छेड़ो हमें देखो हम भी कहेंगे।
बहुत सुन चुके बद जवानी तुम्हारी॥ अदा जान०॥
रकीबों से सोहबत है बंदेसे परदा।
हमी से है कुछ लन्तरानी तुम्हारी॥ अदा जान०॥
नहीं दाग लाला के बे वजह दिलपर।
ये रखता हूं जानी निशानी तुम्हारी॥ अदा जान०॥

॥ ग़ज़ल ॥

तेरा हुस्न है चन्दरोज सनम आखिर खिजाँ हो जायगा॥
बामपर नंगी न बैठो ऐ सनम महेताब है।
चाँदनी पड़ जायगी मैला बदन हो जायगा॥ तेराहुस्न०॥
कुबके ढेले पड न मारो ल्हाश पै मेरी सनम।
मिट्टी कन२ के गिरे मैला कफन होजायगा॥ तेराहुस्न०॥
एक बोसे के लिये तड़फा किये हम रात भर।
जब कहा तब यों कहा ठहरो कोई आजायगा॥ तेराहुस्न०॥
बद जबानी छोड दे मैं हुं आशिक बे जबाँ।
गालियाँ देने से तुमको क्या मजा मिलजायगा॥ तेराहुस्न०॥
इश्क का सौदा जो तूने खूब किया रमजान अजी।

इन बुतों को छोड़ दो तुमको खुदा मिल जायगा ॥
तेरा हुस्न है चन्द्रोज० ॥

॥ रेखता ॥

दिलदार यार प्यारे गलियों में मेरी आजा ।
आंखें तरस रही हैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥
चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारे ।
लाखों ही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा ॥
तेरेही हेत मोहन छानी है खाक बन बन ।
दुख झेले सरपै अनगन अब तो गले लगाजा ॥
मनको रहूँ मैं मारे कब तक बतादे प्यारे ॥
सूखें विरह में तेरे पानी इन्हें पिलाजा ॥
सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठि रोई ॥
जिसका कहीं न कोई उसका तो जी बचाजा ॥
मुझको न यों भुलाओ कुछ शर्म जी में लाओ ।
अपने को मत सताओ दर्शन मुझे कराजा ॥
दिलदार यार प्यारे० ॥

॥ गज़ल ॥

तुम तो खफा हो हमको गले से लगाये कौन ।
यारब हमारे दिलकी लगी को बुझाये कौन ॥
आशिक समझ के करते हो नाजुक मिजाजियां ।
गर हम न हों तो नाज तुम्हार उठाये कौन ॥

॥ गजल ॥

जबसे है तुझसें आंख सितमगर लगी हुई ।
एक फांस सी जिगर में है दिलवर लगी हुई ॥

जब से हुआ है मुझको तेरा इश्क माहरू ।
एक आगसी जिगर के अन्दर लगी हुई ॥
जाती नहीं यह जान न आती है मुझको कल ।
कैसी यह जोंक है मेरे दिल पर लगी हुई ॥
बेलाग किस क़दर है तेरो तेग तेजरू ।
रखेगी यह न बाल बराबर लगी हुई ॥
पोशीदा गर करे कोई चाहत यह क्या मजाल ।
छिपती नहीं यह आँख किसी पर लगी हुई ॥
शायद के यार भूलने वाला है फिर कहां ।
हिचकी इस सबब से है गौहर लगी हुई ॥

॥ गजल ॥

जो है मन कामना सुखकी सदा शिव नाम भज प्यारे ।
मैं कहता हूँ तेरे हितको सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
बराबर शम्भु के दाता जगत में है नहीं कोई ।
पलक में देते हैं सिद्धि सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
कहा है ध्यान मन तेरा शरन गौरीश की लेकर ।
तरे लाखों महा पापी सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
मिटा हर घोर दुख जनके महा सुख दान करते हैं ।
तू तकता बाट है किसकी सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
तेरे ऊपर दया करके पुरी अपनी में ले आये ।
नहीं फिर चेत क्यों अब भी सदा शिव नाम भज प्यारे ।
वो तारक मन्त्र दे तुझको कभी संसार सागर से ।
करेंगे पार बिन देरी सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
कहीं भोला मिलै ऐसा समझने सीधी उलटी के ।

अनूठे देव हैं शिवजी सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
तेरे मनकामना झरसारे पुरेंगे ले शरन उनकी ।
मिलैगी सीधी मुक्ती सदा शिव नाम भज प्यारे ॥
रहैगी क्या कमी तुझको कभी जो खोल बैठेंगे ।
वो रसमय सिद्धि की झोली सदा शिव नाम भज प्यारे ॥

॥ रेखता ॥

रस रास में रँगीली छबीली संग है ॥ अ० ॥
मृगमद की आड़ सोह शोभा अपार है ।
कानों जड़ाऊ झुमका गले हीर हार है ॥रस०॥१॥
नैनों के बीच अञ्जन खञ्जन प्रमान है ।
मोती की देख जोती रवि कै समान है ॥ रस० ॥२॥
पहुँची जो दोऊ करमें घराडीजो लाल है ।
प्यारी की सूही सारी सुन्दर विशाल है ॥रस०॥३॥
प्यारी की देख शोभा सुन्दर सिंगार है ।
कृष्णदास कहें हँसिके प्राणन अधार है ॥ रस०॥४।

॥ गजल ॥

हमको उमा महेश जी दरशन दिया करैं ।
निज दास की आशा सदा पूरण किया करैं ॥
कपूर गौर स्वरूप उर अन्तर रहा करैं ।
परलोक को साधक सदा मोसों कहा करैं ॥
पदकंज मंजु महेश के मनमें बसा करैं ।
तिन को मिलै शिवधाम जे तन् मन् कसा करैं ॥
देवीसहाय हमेश जो शिव शिव जपा करैं ॥
जग योनि से छुट जायँ वे शम्भु कृपा करैं ।

॥ गजल ॥

गंगे गरीबों पर करो नित गौर और सहाय ।
बहु जन्म के अघ ओघ जे तुम मातु देहु बहाय ॥
जे जान जन अपने तिन्हें नित दरस देन बुलाय ।
पीवें तुम्हारा नीर ते तन तेज पुञ्ज दिखाय ॥
बहु दाम आस लगाय तन त्यागे किनारे जाय ।
नन्दी विमान चढ़ाय के निज पुर दियो पहुँचाय ॥
देवी सहाय को देहु वर बारानसीको जाय ।
गौरीश को सुमिरन करे नित प्रेम प्रीति लगाय ॥

॥ ख्याल ॥

हे जग सार विचार यही शिव नाम सदा सुखदाई रे ॥टेक॥
जोग समाधि बनै नहिं कलि में भूख प्यास अधिकाई रे ।
तापर काम कमान लिये सर मारन मोह दिखाई रे ॥
व्याध महा अघ रासि रह्यो मृगया हित गो बन धाई रे ।
शीत बिबस शिव नाम कह्यो तजि तन शुभ गति सो पाई रे ॥
गीध अजामिल गनिका तारी नाम मंत्र अस भाई रे ॥
ता प्रभु को नित भजन करो तुव बिगरी सब बनिजाई रे ॥
देवी सहाय भजन के कीन्हें हृदय विमल ह्वै जाइ रे ।
तहँ गौरीपति रूप निरखि नित नूतन प्रीत लगाई रे ॥

॥ रेखता ॥

धीरे चलो चमन में क्या गुल बहार है ।
क्या खूब खरी रंगत खिली बेशुमार है ॥
सुरखी सोहाग सुन्दर शोभा अपार है ।
चम्पा धतूरा जूही खशबू बहार है ॥

प्यारी की नजर पड़ती फूलों की डार है।
गुञ्चा गुलाब गुल का क्या बेकरार है॥
दिलदार यार बुलबुल को इन्तजार है।
देखो निकुंज कैसी सुन्दर सुढार है॥
छज्जे व बुर्ज मेहंदी की दरदिवार है।
देता है मदन मुझको फूलों के हार है॥
केशव कहैं किशोरी कीजै विहार है।
धीरे चलो चमन में क्या गुल बहार है॥

॥ लावनी ॥

तब पुष्पक सम बहु विमान थे सुखकारी।
अब धूम्र यान के बिना न अन्य सवारी॥
तब यौगिक बल से मुनि सब बातें जाने।
अब तड़ितार से समाचार गृह आने॥
तब मंडित गृह थे रत्न रजत सोने से।
अब मण्डित गृह हैं कांच चीन प्याले से॥
[चा०] ब्राह्मण वेद उच्चारें घड़ी घड़ी।
अब अंग्रेजी की तारें बह चली।
तब धूम महा यागों के गली गली॥
अब अग्नियन्त्र के धूम गगन संचारी।
पीते थे तीर्थ अब सोडा जल जारी॥

॥ लावनी ॥

बीर शिरोमणि राजनीति गुरु दुष्टन कुल संहारी।
भुज आजानु विशाल वक्षस्थल चक्र सुदर्शन धारी॥
अशरण शरण हरण दीनन दुख पट पीताम्बर धारे।
अहो भाग्य मम परम सहायक यदुपति स्वयम पधारे॥

॥ लावनी ॥

वीरों के शंखध्वनि से यही युग में अन्तर आन पड़े।
मिथ्या स्वप्न देखनेवाले हुए युद्ध में आन लड़े॥
कालग्रस्त जनों के तन में फिर से रक्त होय संचार।
छोड़ शिथिलता समरस्थल के हेतु होगये चट तैयार॥

॥ लावनी ॥

वह शूर वीर रण में लड़ने जाते हैं,
जो मन में माया मोह नहीं लाते हैं॥
यह रण भूमि है चौसर लम्बी चौड़ी,
योधाओं का है क्रोध यही है कौड़ी॥
जो रँग जाते हैं वही विजय पाते हैं॥ जो मन में० ॥

॥ राग शंकराभरण [लावनी] ॥

यह दैव बड़ो बलवान कछु न अनुमान॥
प्रतिकूल होत अपमान करे,
यह त्यागि सकल अभिमान॥
[चा०] श्री हरिश्चन्द्र सतधारी॥
श्री रामचन्द्र असुरारी॥
नल राज भये सविचारी॥
पै तजै न चतुर सुजान, बड़ो बलवान॥

॥ लावनी ॥ २ ॥ सुभद्रा की ॥

मोहे रही बहुत कछु आस तुम्हारे पास॥
समुझाय बुझाय रिझाय कृष्ण को कहो दुखकी बात॥ [चा०
यह धारी क्यों निठुराई॥ तुम भाभी होहु सहाई॥
मोहे प्रीतम देहु मिलाई॥
नहिं मरूँ जाय विष खाय करो विश्वास॥ मोहे रही०

॥ लावनी ॥

ऐ गुल् तेरी उल्फत में गुल्ज़ार भी है और खार भी है।
बड़ा लुत्फ़ है इश्क में मार भी है और प्यार भी है।
कभी वस्लका हमसे इक़रार भी है इन्कार भी है।
कभी गालियां झिड़की है और कभी शीरीं गुफ्तारभी है।
कभी खिज़ाँ है कभी गुल्शन् है कभी बागे बहार भी है।
बोला ये मंसूर दार में दार भी है दीदार भी है।
बड़ा लुत्फ़ है इश्क़ में मार भी है और प्यार भी है ॥ १ ॥
कभी तौक गरदन में पडा और कभी फूलों का हार भीहै।
कभी बिरहना बदन है कभी तन पै सिंगार भी है।
कभी सैर सहरा की है और कभी कूचा बाज़ार भी है।
कभी है राहत कभी रंजीदा कभी दिले बीमार भी है।
कहा लैला से अब मजनूने अब सुलह भी है तकरार भीहै।
बड़ा लुत्फ़ है इश्क में मार भी है और प्यार भी है ॥२॥
कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अश्कों का तार भी है।
कभी नज़र का छिपाना कभी निगाहें चार भी है।
कभी गले से लगे कभी वह करता दागेमदार भी है।
कभी जिलाये कभी एक अदा से डाले मार भी है।
कभी करे ऐयारी औ वह बनता मेरा यार भी है।
बड़ा लुत्फ़ है इश्क़ में मार भी है और प्यार भी है ॥३॥
कभी ज़ख्म पूरे हों जिगर के कभी बदन पर गारभी है।
कभी करे खुश कभी वो करता पूरा दिल बेज़ार भी है।
देवीसिंह ये कहे मेरा वह शोख़ सितमगर यार भी है।
जो चाहै सो करै अब वही दिलका मुख्तार भी है।

बनारसी कहै नेकी बदी दोनों का उसे अखत्यार भी है ।
बड़ा लुत्फ़ है इश्क़ में मार भी है और प्यार भी है ॥ ४ ॥

॥ प्रभाती ॥

जगमगति कनकमहलमें जागी मातु जानकी ॥
कौशल्याके पाँय लागु जीवो जनकरायकी ॥ टेक ॥
आस पास सब सखी खड़ी धुन नूपुर की ॥
चंपेकी कली मानों फूली असमान की ॥ १ ॥
सकल देव करत सेव चौकी हनुमानकी ॥
लक्ष्मण कुँवर चँवर ढोरैं सेज सीतारामकी ॥ २ ॥
प्रात प्रीतम अपने महल राम लक्ष्मण जानकी ॥
साधु सन्त करत सेवा और बात ज्ञान की ॥ ३ ॥
अयोध्याकी सरस नारी अपने अपने धामकी ॥
सियाजी को रूप मानो उगी किरण भानुकी ॥ ४ ॥
चित्रकोट अति विलास अधिक महिमा रामकी ॥
उठत प्रात विनती करत तुलसीदास सिय रामकी ॥ ५ ॥

॥ प्रभाती ॥

श्रीरामानुज अवतार मनोहर सुन्दर सुभग शरीरं ॥ टेक ॥
अखिल लोकके शोक विनाशन भये करुणाकर गंभीरं ॥१॥
खलखंडित रणमंडित पंडित कर रुचि दंड त्रिदंडं ॥
तिलक श्री चुरण शशिमुख झलकै कुंडल मंडित गंडं ॥ २ ॥
अरुण भँवर धरेचरण भुजायुत सरस सुवर्ण उदारं ॥
शांति दांति वेदांत कांतिसम महिमा अगम अपारं ॥३॥
तिमिर प्रचंड वितंड विखंडन मंडन द्रविड विकासं ॥
आदि ब्रह्म सहोदर भूधर भुक्ति मुक्तिप्रतिपाल विनीतं ॥४॥
शोभकराम निष्काम स्वस्तिकृत भक्तिविभूषित गीतं ॥ ५ ॥

॥ प्रभाती ॥

ठुमकि चलत गौरिलाल बाजत पैंजनियाँ ।
खेलत गणराज आज आवत नहिं कनियाँ ॥
सेदुँर को तिलक भाल मानहुँ रवि प्रात काल
माणिकमणि मुकुटलाल चमकत बहु मनियाँ ।
श्रवणन कुण्डल विशाल मणियनकी गले माल,
विहँसत मुख मन्द मन्द सुन्दर सुख दनियाँ ॥
किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय,
झपटि गोद लेन चहत शंकर की रनियाँ ॥
देवी को सहाय हाथ जोरि शीश नाय मात,
मांगत बरदान सदा तेरो यश भनियाँ ॥

॥ प्रभाती श्री गंगाजी की ॥

जय जय श्री गंग देवि जय महेश रानी ॥ टेक ॥
गौर वरण तन विशाल, हंसासन कण्ठ माल,
सेवत सुर लोकपाल, चतुर फलनि दानी ॥ १ ॥
पावन आनन्द निदान, दूजो को तुम समान,
कविजन गुण करत गान, श्रुति पुराण बानी ॥ २ ॥
रविकुल नृप धन्य हेत, प्रगटी भव सिन्धु सेत,
विष्णुपदी दिवि निकेत, विधि सुरेश मानी ॥ ३ ॥
निर्मल बर बहत नीर, भंजन भव अमित भीर,
हरिबिलास बास तीर, देहु दीन जानी ॥ जय० ॥ ४ ॥

॥ प्रभाती

जय जय रघुकुल दिनेश कौशिलाबिहारी ॥ टेक ॥ सोहत कर धनुष तीर, महाबीर समरधीर, साधु तीर सघन भीर संग लै

शिकारी ॥ १ ॥ बिचरत कहुं कुंज कुंज, जहां भंवर पुंज पुंज, फूले मन रंज कंज सुमन अरुण चारी ॥ २ ॥ चटक चलन अलक हलन, कुण्डल की डुलन खूब, बार २ सखन मिलन परम मोद कारी ॥ ३ ॥ एक हाथ लखन लाल, धनु गहे रसाल खाल, नवल नृपति लाल आज दीन दया धारी ॥ ४ ॥ चाल चलै चटक घेर, हट हट पुनि हसैं हेर, लोचन फल दान अयन ललित मैन हारी ॥ ५ ॥ चोप चोप चाह जहां, चितै चितै चखन तहाँ, पावैं रघुराज चार चँवर मोर ढारी ॥ ६ ॥

॥ प्रभाती ॥

जागिये नृपाल लाल कौसिला दुलारे ॥ टेक ॥
दीपक छबि क्षीण भई, हारन शुभ बास गई।
तमचर निज बाणि दई, अस्त भये तारे ॥ १ ॥
मन्द मन्द पवन चली चकई पिय जाय मिली।
पुष्पन की कली खिली कुंज मे सुखारे ॥ ॥
इन्द्रादिक सेव करन ब्रह्मा निज वेद पढ़न।
शङ्कर तव ध्यान धरन अवध में पधारे ॥ ३ ॥
बंदी जन विरद भने याचक अति जुरे घने।
पुरजन सब प्रीति सने आये जुरि द्वारे ॥ ४ ॥
उठिये रघुबीर धीर धरिये कर धनुष तीर।
हरिये गोपाल पीर करिये भव पारे ॥ ५ ॥

॥ गज़ल कौव्वाली ॥

धन धन महाबीर बजरङ्ग रावण लंक जलानेवाले।
आज्ञा रघुनन्दन की पाय पहुँचे गढ़ लङ्का में जाय।
क्रोधित हो दी आग लगाय, राम के काम बनानेवाले ॥धन०॥

रावण की बाटिका उजारी मारा अक्षय कुमार सुरारी ।
फँसगये ब्रह्मफांस यकबारी लीला ललित दिखानेवाले ॥ धन० ॥
चढ़ि द्रुम अशोक पर हर्षाय दीन्ही झट मुद्रिका गिराय ।
चरणन गिरे सिया के आय पिया की खबर सुनानेवाले ॥धन०॥
शक्ती मेघनाद ने मारी व्याकुल भये लषण बलधारी ।
लाये संजीवनी सुखारी लक्ष्मण प्राण बचाने वाले ॥ धन० ॥
माया रचि अहिरावण धाय जब हरलेगया दोनों भाय ।
रामको लक्ष्मण सहित उठाय जाय पताल से लानेवाले ॥धन०॥
दुष्टों को मारो तत्काल भक्तों का करिये प्रतिपाल ।
शरणागत द्विज मन्नीलाल धन विद्या बल पानेवाले ॥ धन० ॥

गज़ल कव्वाली ।

आये ऊधो जी महाराज हमको योग सिखानेवाले ॥
लाये मनमोहन की पाती बाँचत जरत बिरह में छाती ।
लिख लिख पठवत योग सँगाती ह्याँ पड़रहेजान केलाले॥आये०॥
हरि जिन शोशन केश सँवारे तिनमें जटा कौन अब धारे ।
प्यारो योगशास्त्र के मारे झूठहि कीन्हे कागज काले ॥आये०॥
कानन करनफूल प्रभु डारे तिन में मुद्रा कौन सँवारे ।
जो तन अंग लगा गये प्यारे तिनमें भस्मी कौन रमाले॥आये०॥
निर्गुन ब्रह्म मानते योगी हम सब सगुण श्याम सँग भोगी ।
जो कुछ होनी होय सो होगी अब तो पड़ी निठुरके पाले॥आये०॥
बिसरत सुरत न एको जाम रम रह्यो रोम रोम में श्याम ।
ह्यां हो कहाँ योग को ठाम जामें धरैं योग जप माले ॥आये०॥
हा विधि कौन कृष्णमति फेरी रानी करी कंस की चेरी ।
भई महरों का चूक घनेरी जो ये कठिन दुःख दे डाले॥आये०॥

पण्डित प्यारेलाल में व्याप हमरे नाम की पडी है छाप ।
गोपीकृष्ण जपैं सब जाप कुबरी कृष्ण नाम कोई ना ले ॥
आये ऊधो जी महराज० ॥

॥ भजन ॥

रकार श्री राजकुमार उदार मकार श्री मिथिलेश किशोरी ।
राम को नाम सदा शुचि सुन्दर वेद पुराणन माहिं लिखोरी ॥रकार०॥
जलचर थलचर जीव सबनके रोम रोममें राम रम्योरी ॥ रकार०॥
भूषित अखिल लोक रामहिं सो रामराम रट बार करोरी ॥रकार०॥
तुलसीदास राम की महिमा गावत शारद शेष थकोरी ॥रकार०॥

॥ भजन ॥

कहत निषाद सुनो रघुनन्दन नाथ न लेवे तुम सन उतराई ॥
जो प्रभु पार उतरिबो चाहो लेव प्रथम पग नाथ धोवाई॥कहत०॥
चरण धोये बिन जान ना देहों चाहे लषन शर मारैं चढ़ाई॥कहत०॥
बारि कठौता में भरि लायो तब प्रभु चरन लीन्ह पखराई॥कहत०॥
सिया सहित प्रभु नाव में बैठे तब केवट ने नाव चलाई॥कहत०॥
श्री भागीरथ पार उतरिके देन लगे केवटहिं उतराई ॥ कहत० ॥
नदी नाव के हम उतरैया भवसागर के तुम रघुराई ॥कहत०॥
लौटत बेर जोई कुछ देहो सो लैलेहों माथ नवाई ॥ कहत० ॥
कर मुद्रिका रामजी दीन्हे लेव निषाद अपनी उतराई ॥ कहत० ॥
छल बल करत छुवत नहीं करसों कोटि जतन करिहारे रघुराई ॥
कहत निषाद सुनो रघुनन्दन० ॥

॥ भजन ॥

जगके रुठे से क्या हुआ जाके राम हैं रखवारे ॥ टेक
चल देख प्यारे सभा में जहाँ कपट के पाँसा परे ।

द्रोपदी को चीर खैंचत खल दुःशाशन डरे ॥ जगके० ॥
चल देख प्यारे समर में तैयार दोऊ दल खरे।
चिंगना बचे भरदूल, के गज घंट वाही पर धरे ॥जगके०॥
चल देख प्यारे खम्भ से नरसिंह होके अवतरे।
हिरणकशिपु उदर विदारेप्रह्लाद की रत्ता करे ॥जगके०॥
चल देख प्यारे लंक में संकट विभीषण पर परे।
तुलसी सराहत राम कोजिन अवध में आ पगधरे॥जगके०॥

॥ भजन ॥

सांचे मनके मीता प्रभुजी सांचे मन के मीतारे।
कब सेवरी काशी में आई कब पढ़ि आई गीतारे॥
जूठे फल सेवरी के खाये नेक काज नहीं कितारे।
चरण छुवत तरगई अहिल्या गिद्धराज गति कीतारे॥
लंका पति को गर्व हरयो औ राज विभीषण दीतारे।
सुग्रीव सखा किये रघुनन्दन बानर किये पनीतारे॥
गुण इस्वाद कठ सों लावैं कौन अधिक परतीतारे।
सुफल यज्ञ मुनिजन के कीना सब भूषण यश दीतारे॥
तुलसीदास छवि निरख जानकी मनवांछित फल लीना।

॥ भजन ॥

हमारे प्रभु अवगुण चित ना धरो।
समदर्शी है नाम तुम्हारो सोई पार करो॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब दोनों मिल एक बरन भये गंगा नाम परो॥
एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो।

सो दुविधा पारस नहिं राखत कंचन करत खरो ॥
एक माया एक ब्रह्म कहावत सूरश्याम झगरो ।
या पदको निर्वाह करो प्रभु नहिं पूण जात टरो ॥

॥ सोहरो ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण जन्म मथुरा लियो, गोकुल चरित दिखाय ।
काशीदास तिहिंको अनंद, कहो सोहरो गाय ॥

ललना, मथुरा में लिये हरि जन्म, गोकुल में चरित करे हो ।
ललना, देवकी ने जाये श्रीकृष्ण, यशोदा खिलाये घरे हो ॥
ललना, भादहुं मास कृष्णपच्छ, रोहिणी नक्षत्र परे हो ।
ललना, अष्टमी तिथि बुधवार, सबही शुभ योग भये हो ॥
ललना, आये ब्रज में श्री कन्त, जनम अर्धरात लये हो ।
ललना, खुलगये हैं ब्रज किवार, चौकीदार सोगये हो ॥
ललना, कटगये तात मातु बंद, उदय मानो चंद्र भये हो ।
ललना, मोर मुकुट शीश राजें, श्रवण कुंडल झलक रहे हो ॥
ललना, गले में बैजन्ती माल, आयुध भुज चार गहे हो ।
ललना, तन जामा कटि में वस्त्र भृगुलता हीय लसी हो ॥
ललना, नील कमल मानों नैना, भौहें कमान कसी हो ।
ललना, कोटिन काम छवि वदन, अंग अंग लाज रही हो ॥
ललना, शोभा है अमितो अपार, तुमरी गति कौन कही हो ॥
ललना, लखो अद्भुत श्यामरूप, तात मातु बिनय करी हो ।
ललना, आज हमारे धन्य भाग, दरश दीन्हें आय हरी हो ॥

ललना, हमें विरह सागर मोह, बूड़तहिं उबार लये हो ॥
ललना, तुम विश्व व्यापक ब्रह्म, अगुणहिंते सगुण भये हो ।
ललना, अपने जनों के हित काज, प्रभुने अवतार लहीहो ॥
ललना, कह ना सकै महिमा बेद, शारद सकुचाय रही हो ।
ललना, धरें शिवसनकादिक ध्यान, तुमरी गति जानी नहीं हो ॥
ललना, सो प्रभु मेरे हित काज, प्रगटह्वै जनम धरो हो ।
ललना, अपनो जन मोहिं जानों, सबै दुःख आय हरो हो ॥
ललना, अब करु बालरूप लीला, ध्यान अस भूलैं नहीं हो ।
ललना, सुन मातु पिता के बैन, पलट रूप बचन कही हो ॥
ललना, हम गोकुल को पठावो, जासें सब काज सरें हो ।
ललना, सुन बसुदेव लिये कृष्ण, चलत मारग में डरें हो ।
ललना, निशि अँधियारी जल वर्ष, मेघा घनघोर रहे हो ।
ललना, जमुना बढ़ी हैं भरपूर, चरण कृष्ण उमड गहे हो ॥
ललना, उछरत बूड़त बड़ी बार, कठिनही से पार भये हो ।
ललना, जब पहुँचे नन्द के द्वार, खुले पट भीतर गये हो ॥
ललना, श्याम सुवाय यशुदा पास, कन्या उन पलट धरी हो ।
ललना, यमुना उतर आये पार, देवकी की गोद भरी हो ।
ललना, कन्या ने रोदन कीन्हों, खबर जब कंस सुनी हो ।
ललना, ज्योतिषी विप्र बुलवाये, भेद बुझ मनहीं गुनी हो ॥
ललना, कन्या को कहो मरवाय, रजक के हाथ दई हो ॥
ललना, लागो बधन तेहि समय, विजुलतासी चमक गई हो ।
ललना, रजक के भुजा उखाड़, कन्या अस बचन कही हो ।
ललना, मारन हारो गोकुलमाँह, वही हाथ मौत रही हो ॥
ललना, यहां नंद महर पुत्र देखि, हरष अति हीय भयो हो ।

ललना, नंद के भये हैं आनन्द, जनम नँदलाल लयो हो ॥
ललना, भे शंकर्षण बलराम, अंशन युत नंद घरे हो ।
ललना, हरि पुरुषोत्तम वासुदेव, निवास गोलोक परे हो ॥
ललना, देवन दुन्दुभी बजाई, बरषा फूलों की करी हो ॥
ललना, सुर नर मुनि जयजय करहिं, प्रगटे त्रैलोक हरी हो ।
ललना, गोकुल बोलउआ फिराय, बालक सुन फूलई हो ॥
ललना, नन्द के होवे उतसाह, खबर ब्रजमांह गई हो ॥
ललना, बाजन लागे बहु बाजे, द्वारों में कलश धरे हो ।
ललना, बजें सहनाई मुरली झांझे, नाल तूर सुरन भरे हो ॥
ललना, नौबद ढोलहिं घहरावें तोपन घनघोर परी हो ॥
ललना, तोरन घले बन्दनवार, झूला झूमरें चौंर भरी हो ।
ललना, द्वारों में कलश धरवाय, पौरिन अति भीर घनी हो ॥
ललना, भाषें बिरदावलि भाट, वेद धुनि विप्र भनी हो ॥
ललना, पलने तुरंग गज घूमें, निसान छड़ी छत्र लिये हो ॥
ललना, मंगल थार ग्वालिनी साज, चलीं सिंगार किये हो
ललना, जो यह सोहरो गावै, सुनैं दुख पाप नसें हो ॥
ललना, चहैं काशीदास अस ध्यान, सदा मम हीय बसें हो ॥

प्रभाती ।

बाबा हमें बसावो काशी ॥ टेक ॥
जाको नाम लिये अघ भाजत तनमें रहै समासी ॥
अन्नपूरणा अन्त देत जहँ सुरसरि बहत सुधासी ॥
बिश्वनाथ पद पूजन कीन्हें सत गति रहत खवासी ॥
देवीसहाय शिवा शिव सुमिरे मोह मिटै भ्रम फांसी ॥

थियेटर ॥

भारत वीरों की याद में, यह गाना भी रोना है ॥
पानी ही नहीं है पात्र में, आंसुओं से मुँह धोना है ॥
(चाला) हुए धर्म्मवान्, गुणवान्. इसी भारत में।
थे बड़े बड़े विद्वान्, इसी भारत में ॥
थी बलवानों की खान, इसी भारत में।
था सबसे ऊंचा ज्ञान, इसी भारत में ॥
अब उन्हीं की हम सन्तान, हुए अज्ञान, मिटा सब मान,
गई सब शान, हा ! आलस औ उन्माद में,
सब खोया औ खोना है ॥ यह गाना भी रोना है ॥

॥ ख्याल ॥

पञ्चतत्व दश इन्द्रियां, यह सर्वत्र समान।
देह, सदा जड़ रूप है, देही चेतन जान ॥
दश पञ्चमध्य चैतन्य एक, जिसका प्रकाश सारों में है।
जैसे, सूरज का गुप्त तेज, चन्द्रमा और तारों में है ॥
उसके प्रकाशही से यह देह, चैतन्य रूप दिखलाती है।
वह व्यापक और चैतन्य कला, सच्चिदानन्द कहलाती है ॥
वही सच्चिदानन्द तुम हो. और वही देश तुम्हारा है।
जो तीन गुणों से परे में है, और पंच-कोष से न्यारा है ॥
व्यवहार में, कर्म्म प्रधान है वह, पर वास्तव में निष्कर्म ही है।
उस जगह एक 'तत्सत्' पद है, 'सर्वं खल्विदम् ब्रह्म' ही है ॥
वह सबकी गति जानता; उसे न जाने कोय।
और अजन्मा सदा वह, मरण न उसका होय ॥
कट सकता नहीं शस्त्र से वह, अग्नी भी नहीं जला सकती।

उड़ सकता नहीं हवा से वह वर्षा भी नहीं बहा सकती ॥
यह जन्म, मरण और काल-कर्म्म, इन सबका उसमें लेश नहीं ।
आनन्द आपमें आप है वह, उसको कुछ होता क्लेश नहीं ॥
उसमें ही यह नाना शरीर, बनते और मिटते जाते हैं ।
जिस तरह पुराने होने पर, यह वस्त्र बदलते जाते हैं ॥
उसकी उस अद्‌भुत शक्ती को, नहीं जड़ शरीर पहिचानता है ।
वह, इस शरीर की सभी दशा, सर्वत्र, सम समय जानता है ॥

कान्त रूप है आत्मा, देह भ्रान्त ही भ्रान्त ।
इसी बात पर और एक, कहता हूं दृष्टान्त ॥

मट्टीके घड़े अनेकों हैं और सब पानी से भरे हुए ।
और एक जगह, या कई जगह या बहुत जगह हैं धरे हुए ॥
देखो सूरज आकाश में है और छाया सभी घडों में है ।
है एक विलक्षण अटल तेज और माया सभी घडों में है ॥
जिस घड़े को अब जाकर देखो सूरजही नजर में आता है ।
और नहीं, एक जगह में है, सब में जलवा दिखलाता है ॥
अच्छा अब घडा टूटता है गलगया, सहारा नहीं रहा ।
सूरज और छाया अब भी है, पर वह उजियारा नहीं रहा ॥

इसी तरह संसार में, घट रूपी है देह ।
छाया रूपी जीव के ,लिए वही है गेह ॥

सूरज रूपी है एक ब्रह्म जो सब पर तेज डालता है ।
है तो यथार्थ में वही अंश, पर नाना रूप भापता है ॥
जो घडा टूटता जाता है, वह सब मट्टी ही मट्टी है ।
छाया अब दृष्टि नहीं आती, यहही धोकेकी टट्टी है ॥
वास्तव में सूरज भी है और छाया भी कहीं नहीं जाती ।

ऐसे ही ब्रह्म अटल है और माया भी कहीं नहीं जाती ॥
छाया का आना जन्म हुआ, जाना मरना कहलाता है ।
वास्तव में जन्म न मरण हुआ, एक स्वप्न नजर में आता है ॥

॥ थियेटर ॥

नाचोरी आज, ठुमक ठुमक मोहनियाँ ॥
ठुमक ठुमक मोहनियाँ, लचक लचक सोहनियाँ ।
थेई थिरक समपै, आओरी ॥ आज ठुमक० ॥
बाणधारी लड़ें ज्यों बाण से, वैसे नाचो ।
जी नहीं लड़ते हैं तलवार से, तैसे नाचो ॥
एक से एक लड़ें जिस तरह, ऐसे नाचो ।
चार पैसे मिलें जिसमें, उसी लै से नाचो ॥
थेई थेई तक, तक तक थेई, हिल मिल रँग राचोरी ।
नाचोरी आज ठुमक ठुमक मोहनियाँ ॥

॥ थियेटर ॥

पुष्प सुगन्धित, फूल फूल के करें विकसित फुलवारी को ॥
कलियन कलियन भौंरा गूँजत, चूमत डारी डारी २ को ।
चटक चटक कर, खिली चाँदनी, चोरत है चित प्यारीको ।
उतरो है यहतारा मण्डल (आलीरी!) देखो मोतिया क्यारीको ।
हिल मिल आओ, गाओ, गोरी! नाचो दै दै तारी को ॥

॥ थियेटर ॥

मोहिं पिया की डगरिया दिखादो सखी ॥
बाट तकत मैं तो हार गई ।

बड़े भोर गये परसों रनमें,
दो रोज भये मोहि दर्शनमें ॥
नहीं नैन में नींद न कल मनमें,
भई बैठे बिठाये बिरहन में ॥
पर मोरे लगाके उड़ा दो सखी,
मोहिं पिया की डगरिया दिखादो सखी ॥
बिन पानी के मीन जियेगी नहीं,
बिन प्यारे के प्यारी रहेगी नहीं ॥
जबलों मुखचन्द्र लखेगी नहीं,
तबलों यह चकोरी छकेगी नहीं ॥
मेरे चाँदको कोई उगादो सखी,
मोहिं पिया कि डगरिया बतादो सखी ॥

॥ थियेटर ॥

खुशामदहीसे आमद है, बड़ी इसलिये खुशामद है ॥
महाराज ने कहा एक दिन, "बैगन" बड़ा बुरा है ।
हमने कहा तभी तो इसका "बेगुन" नाम पड़ा है ॥
खुशामद से सब कुछ रद है बड़ी इसलिए खुशामद है ॥
महाराज, कुछ देर में बोले, बैगन तो अच्छा है ।
हमने झट कहदिया तभी तो सरपर मुकुट धरा है ॥
खुशामद में इतना मद है, बड़ी इसलिए खुशामद है ॥
स्वामी, दिनको रातकहे, तो हम तारे चमकादें ।
यदि वह रातको दिन कहदें, तो सूरज भी दिखलादें ॥
खुशामद की भी कुछ हद है ? बड़ी इसलिए खुशामदहै ॥

स्वामी कहे 'मद्य, कैसा है, कहें 'सुरा, सुखकर है।
स्वामी पूछे, 'हिंसा, जायज ? कहदें, जीव अमर है॥
बुरा है भला, भला बद है, बड़ी इसलिए खुशामद है॥

॥ थियेटर ॥

गारी दूँगा लाखन में मोरे सैयाँ।
अबतो मैं मानूं नाँही रार करूँगी,
बर्छीसी मारी मोरे बातन में।
॥शेर॥ बाउली करदी है, है, है, मेरी नारी, उसने।
मेरे सासे, मेरी पगड़ी ही, उतारी, उसने॥
आजतक फोड़ता ब्रजमें वो रहा गागरियाँ।
फोड़दी आज तो तक़दीर हमारी, उसने॥
रूठोतो रूठो राजा, मेरी बलायसे,
मेरो तो मन लागो मोहन में॥ मोर. सैयाँ० ॥

॥ बिहाग ॥

बिना पति सूना सब संसार।
पति ही व्रत है, पतिही तप है, पतिही है करतार।
पतिही से पत है इस तन की, पति पत राखनहार॥
जबलों पति है, तबलों पत है, बिन पति विपति हज़ार॥
जिसका नेह चरणमें पतिके, वही पतिव्रता नार॥
एक पतिव्रत रहे जगत् में, तो सब व्रत निःसार॥
बिना पतिव्रत के नारीका, जीवन है धिक्कार॥

॥ भजन ॥

जमाना रङ्ग बदलता है ॥

रोज सुबह को दिन चढ़ता है, शाम को ढलता है ॥
आज हुआ है जहाँ में कोई, शाहों का भी शाह।
कलको वोही, कौड़ी कौड़ी को हो रहा तबाह॥
बिगड़कर कोई संभलता है, जमाना रङ्ग बदलता है ॥
बड़े बड़े होगये यहांपर, राजा रंक फ़कीर ॥
खाली हाथों आये थे सब, खाली गये अखीर।
वक्त टाले नहिं टलता है, जमाना रङ्गबदलता है ॥
कितनेही पृथ्वीपति बनकर, होकर मालामाल।
अन्त समय में हाथ झाड़ते, गये काल के गाल ॥
यहाँ वश किसका चलता है, जमाना रङ्ग बदलता है ॥
अच्छा और बुरा जैसाहो, रहजाता है नाम।
इसीलिये दुनियाँ में नेकी करलो, "राधेश्याम" ॥
नही तो वक्त निकलता है, जमाना रङ्ग बदलता है ॥

॥ शिव स्तुति ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दली रुचिप्रबद्धकन्दरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदम्,
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥
अखर्वसर्वमङ्गला कलाकदम्बमञ्जरी,
रसप्रवाहमाधुरी विजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकम्,
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।

नमामि दुःखनाशनं, विशुद्धज्ञानमण्डितम्।
नमामि चन्द्रशेखरं, कृपानिधिं त्रिलोचनम् ॥
त्वदीय नाम अक्षरं, जपंति ये निरन्तरम्।
विहाय सर्व संशयं, व्रजन्ति ते शिवालयम् ॥

॥ भजन ॥

इस दुनियाँ में तुम आये हो, तो कुछ नेकी करलो बाबा।
कुछ और साथ नहिं जायेगा, नेकी का विस्तर लो बाबा ॥
आलस और अभिमान छोड़कर, सीधे सच्चे चलो राहपर।
चढ़के नेकी की नौकापर, भवसागर तरलो बाबा ॥
मानुषतन बीता जाता है गया वक्त नहीं हाथ आता है।
जिससे काम चले उस लोक में, वह पूँजी धरलो बाबा ॥

॥ रेखता ॥

शतरंज चौपड़ औ गंजीफा नर्द है बहु रंगका ॥
बाजी लगाई बाँसुरी बेसर हरे सो क्या हुआ ॥ १ ॥
योगी युगत जाने नहीं कपड़ा रँगे से क्या हुआ।
मसनंद मंदिर छांड़ के बाहर सोवे सो क्या हुआ ॥ २ ॥
काशी अयोध्या द्वारका तीरथ भरमतागर फिरा ॥
एक राम नाम लिया नहीं तीरथ किये से क्या हुआ ॥ ३ ॥
गांजा अफीमी औ शराबी बोजके चाखत फिरा ॥
एक रामरस चखता नहीं अमली हुए से क्या हुआ ॥ ४ ॥
पंडित पुराना बांचके घर घर कथा कहता फिरा ॥
पारब्रह्म जाना नहीं पण्डित हुये से क्या हुआ ॥ ५ ॥
काजी किताबाँ खोल के समझावता सब लोग के ॥
अपना मझब जाना नहीं काजी हुये से क्या हुआ ॥ ६ ॥

इस देश का धोबी भला कपड़ा धोवे साबुन लगा ॥
निज मैल को धोना नहीं धोबी हुये से क्या हुआ ॥ ७ ॥
कहता कबीर शोचके नर शोच रे अपने मने ॥
साहब तुम्हारे पास हैं बन बन ढूंढे से क्या हुआ ॥ ८ ॥

॥ राग-जैजैवन्ती ॥

झाँकती झरोखे ठाढ़ी नंदनी जनक की ॥ ध्रु० ॥
कुँवर को कोमलगात कहे को पिनाते बात,
छाँड़िदे प्रतिज्ञा तात धनुहा खँडनकी ॥ झांकती० ॥
कोउ न धनुष तोड़े भूप सब हारि छोड़े ।
लषन कहहिं जैसे पखुरी कमल की ॥ झाँकती झरोखे० ॥
फूलन की माला हाथे सखी सब संग साथे ।
ठुमुकि चलत जैसे पुतरी कंचन की ॥ झाँकती० ॥
तुलसी को याही बानी तोरिहैं धनुष तानी ।
बांस की धनुहियां मानो लड़िका खेलन की ॥ झांकती० ॥

॥ राग मारू ॥

राम सोचैं वाली औ बीर हनुमान ॥ ध्रु० ॥
सीता हरण मरण दशरथ के लक्ष्मण लागे बाण ।
इतनी बिपति परी हरि ऊपर शोचत कृपा निधान ॥ १ ॥
लक्ष्मण मरे हमहूं मरि जै हैं प्रिय संग त्यागे प्राण ।
इतना यश तुम लेहु पवनसुत तीन मूर्ति देहु दान ॥ २ ॥
इतना सुनि तब कोपे पवनसुत गरजि गये असमान ।
ला द्रोणा का मूल सजीवन उगन न पाये भान ॥ ३ ॥
वैद सो चान करैं बैदेही लक्ष्मण राखे प्रान ।
तुलसीदास भजो भगवाना भे टैं बैद सुजान ॥ ४ ॥

॥ राग बंगाली ॥

सिया के कारण जारी लंका फिरि गई राम दोहाई हो ॥ध्रु०॥
कहति मंदोदरि सुनु पिया रावण कैसी कुमति है स्वामी हो।
जाकी नार तुमहिं हरि लाये सो प्रभु अन्तरयामी हो ॥ १ ॥
जामवन्त मंत्री ऐसे जिनके वीर लषण से भाई हो ॥
हनुमत ऐसे सेवक जिनके चुणहिं में लंक जराई हो ॥ २ ॥
लंका ऐसी कोट समुद्र ऐसी खांई कुम्भकरण ऐसे भाई हो।
मेघनाद से बेटा जाके सो तिया काहे हेराई हो ॥ ३ ॥
रावण मारिके लंक को राजा बिभीषण भाई हो।
तुलसिदास श्री रामचन्द्र संग सिया अयोध्या आई हो ॥ ४ ॥

॥ बारह मासा ॥

कोई कागज बांचोरी ए राधा ऊधो संग पठायो ॥ ध्रु० ॥
चहुँदिशि बदरा उठो घुमडाय। लो द्वारिका से कृष्ण बुलाय ॥
जवानी दिवानी सिरोही के बाढ़। ताहूपर ओलढ़आयोआषाढ।
के जल बरसायो ॥ कोई० ॥ १ ॥ घर घर झूला डारें सबनारि।
संग सहेलिन के तेवहारि। जलन सोहात न भावत अन।पिया
बिन फीको लगे सावन। उदासी आयो ॥ कोई० ॥ २ ॥ रैनि
अँधेरी झुकी मेरी बीर। कुब्जा चेरी औ कृष्ण अहीर। ऊधो
सँघाती बाजादों के। कैसे कटे दिन भादों के। वा संग न
लायो ॥ कोई० ॥३॥ फेर कनागत लागोरी आय। पिया बिन
मोको धरम न सोहाय। जब सुधि आवत खाव पछार। योंहीं
चल्योरी अधर्मी कुंवार। सो पिय न मिल्यो ॥ कोई० ॥ ॥ ४ ॥
फूले कॉस शरद ऋतु पाय। ऊधो के राधा मत पछताय।
सांचीसी बात कहूं एक मैं। कृष्ण मिलाऊँ कातिक में॥ ऐसेमन

समझायो ॥ कोई० ॥ ५ ॥ इतनी सुनत जिय परगो चैन। कैसे मैं देखूँ सलोने के नैन। ऐसे कहें सबरी मन में। कृष्णमिलेजब अगहन में। तो करें मन चाह्यो ॥ कोई० ॥ ६ ॥ दिन दिन दूना परन लागे ठंढ। कुब्जा सौति भई परचण्ड ॥ हमारी हवेली है नहिं फूस। कुब्जाको आयो दाहिने पूस ॥ के जादू चलायो ॥ कोई० ॥७॥ लगत बसंत बजे डफ झांझ। जीव जरे ज्यों ज्यों आवे सांझ ॥ को ठग लेगो हमरोनाह। देखें जादिन बीते माह। के मित्र कमायो ॥ कोई० ॥८। यह ब्रजमें सखि मैं न रहूं। रोज की चोरी कहां लौं सहूं। पिया बिनफीके हैं सबके सोहाग। चेरी बलमु संग खेलत फाग। हमें बिसरायो ॥ कोई० ॥ ९ ॥ पाती झरन लागी फूले रूख। रातको नींद न दिनको भूख ॥ फल बिन जैसे प्रास और वेंत। योंहीं चलोरी अधर्मी चैत। बडोदुख पायो ॥ कोई० ॥ १० ॥ खेत पकी सब कावे आय। श्याम बोलायो सो लोभे जाय। फेर क्या आय बढोरोगे राख। चेरी के साख हमैं बैशाख। हमैं बिसरायो॥कोई०॥ ॥११॥ ऊधोने जाय कही सबरी। हरिने कूच कियो वा घरी ॥ और दिये सब ब्रज को भेंट। राधा कहे धनि धन्यरे जेठ ॥ तैं पीव मिलायो ॥ कोई० ॥ १२ ॥ बांसबरेली के लालहिंदास। गाइ सुनायो बारह मास। लौंद सहित जो गाइ कहें। बारम्बार हरीते मिलें। ऐसे ज्ञान बतायो ॥ कोई० ॥ १३ ॥

॥ सावनकी बारहमासी ॥

प्रथम मास आषाढ हे सखी साजि चले जैसे घार हो।
एक प्रीति कारण सेत बाँधल सिया उदेस श्रीराम हो ॥१॥
सावन हे सखि शब्द सुहावन रिम झिम बरसत बून्द हे।

सबके बलमुआं रामा घर घर अइलैं हमरा बलमू परदेस हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्री राम हे॥
भादों हे सखी रैन भयावन दूजे अँधेरिया रात हे।
ठनका जो ठनके रामा बिजली जो चमक से देखी जियरा डेराय हे।
यह प्रीति कारण सेत बाँधले सिया उदेस श्रीराम हे।
आसिन हूँ सखी आस लगवली आस न पुरल हमार हे।
आस जो पूरे रामा कुंवरी सौतिनियां जिन कन्त रखले लोभाय हे॥
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
कार्तिक हे सखी पुण्य महीना सखी कर गंगा स्नान हे।
सब कोई पहिरे पाट पटम्बर हम धनी गुदरी पुरान हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
अगहन हे सखी अगर सुहावन चारो दिसा उपजल धान हे।
चकवा चकैया रामा खेल करत हैं सेई देखि जिया हुलसाय हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
पूस हे सखि ओस परिय गैलो भींजि गैलो लम्बी २ केश हे॥
चोलिया जो भींजे ला कटाव के जोबना भींजे अनमोल हे॥
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्री राम हे॥
माघ हे सखी ऋतु बसन्त आईगैलो जाड़ाके दीन हे।
यहां पियवा जोरहितरामा कोरवालगावत तब कटत जाडा हमार हे॥
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेश श्रीराम हे॥
फागुन हे सखी सब रंग बनाय खेलत पियाके संग हे।
ताहि देखि मोरा जियरा जो तरसे का पर डालू मैं रंग हे॥
यह प्रीति कारण सेत बाधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
चैत हे सखी सब बन फूले गुलाब हे॥

सखी सब फूलें रामा दिया संगमें हमरो जो फूले मलीन हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
बैशाख हे सखी पिया नहीं आये बिरह कुंहकत मेरो गात हे।
दिन जो कटे रामा रोवत रोवत कुलकत बिते सारी रात हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
जेठ हे सखी आये बलमुआं पूरल मन के आस हे।
सारे दिना सखी मंगल गवलीं रैन गवांये पिया संग हे।
यह प्रीति कारण सेत बांधले सिया उदेस श्रीराम हे॥
जोगनरायण गावे बारहमासा मित्र लेना बिचार हे।
भूल चूक मेरो कीजे क्षमा पूरगेलो बारहमास हे॥

॥ आसावरी व झंझौटी ॥

बाल्मीकि तुलसी जीसे कहि गये ऐसा कलियुग आवेगा ॥ध्रु०॥
ब्राह्मण होके वेद न जाने मिथ्या जन्म गवावेगा।
बिना खड्गके क्षत्री उठिहैं शूद्रहिं राज चलावेगा॥बाल्मीकि०॥
बेटा मातु पिता नहिं चीन्हें त्रियासे नेह लगावेगा।
जो तिरिया स्वामी को जाने प्राये पुरुषलौलावेगा॥बाल्मीकि०॥
सती यती कोइ बिरलै होइहैं सब दुखिया होइ जावेगा।
कहें कबीर सुनो भाइ साधो राम नाम नहिं आवेगा॥बाल्मीकि०

॥ आसावरी व झंझौटी ॥

जिया मति मारो सुवा मति लावो मास बिना मति आवो रे॥ध्रु०॥
नदी किनारे एक बेल बिरछिया उसमें पात नहीं है हो।
वही पात चुनि खात मिरिगवा मृगाके माथ नहीं है हो॥जिय०॥
उर नहिं खुर नहिं चरण चोंच नहिं बिना जीवके हंसा हो।

सो ले आवहु मोहिं दिखावहु तुम्हरी होय प्रशंसा हो जिया० ॥
गहिरी नदिया अगम बहति है लाख चौरासी धारा हो ।
वाके किनारे बेलको गछिया साहब के दरबारा हो ॥ जिया० ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निरबानी हो ॥
जो यह पदके अर्थ लगावे वही महा गुरुज्ञानी हो ॥ जिया० ॥

॥ राग परज ॥

दूनोजन राह बिगारिन भाई ॥ ध्रु० ॥
हिन्दूकी हिन्दुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
वेश्याके गोड़नारी लोट कहां रही हिन्दुवाई ॥ दूनो० ॥
नदी किनारे सूवर मरिगो मछली नोच के खाई ।
सो मछली को तुरका खाये कहां रही तुरकाई ॥ दूनो० ॥
ब्राह्मण पहिने मोटी जनौवा ब्राह्मनी का पहिराई ।
जन्म जन्म की शूद्री ब्राह्मणी ताको छुवा खाई ॥ दूनो० ।
हिन्दू जारो झारखण्ड में तुरका कबर खोदाई ॥
हिन्दू ऊपर पानी बरिसे तुरका सरले गंधाई ॥ दूनो० ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो अंधे जग दुनियाई ।
साँच कहे जग मारन धावे झूठे जग पतियाई ॥ दूनो० ॥

॥ रागनट ॥

पढोरे मन ओना मासी धंग ॥ ध्रु० ॥
ओंकार संसार जो सिरजा वाही में सब रंग ।
वे स्वामी पूरे जगते न्यारे बसते सबन घट अँग ॥ पढो० ॥
नाम नरायन नीचे माधो नाना रूप धरंग ।
निराकार निर्गुण अविनाशी लखि न परे कछु अंग ॥ पढो० ॥
मायो मोह मगन ह्वै रहना उपजे रंग बिरंग ।

माटीके तन थिर न रहतु हैं मद ममता के रंग ॥ पदो० ॥
सत्या शील स्वभाव जो राखो सहज सबूरिहि अंग।
सत्य बचन साधुन के राखो सिरजनहारभी संग ॥ पदो० ॥
धन्धा धोखा दिलमें न राखो जपो हरिहर निरद्वन्द ।
कह गोरख गुरु पूरे पावो गरुके नाम अनन्द ॥ पदो० ॥

॥ राम कली ॥

चलु मन पञ्चकोश अविनाशी ॥ अस तीरथ दूसर ना जगमें वेद विदित उपमासी ॥ ध्रु० ॥ प्रथम नहान करो मनि-कर्णिका दूसर आसीजासी। तीजे जयकरडेसर पहुँचो शिव पूजो सुखरासी ॥ चलु० १॥ भोरे भीमचरड मेंपहुँचोकरोनहान बनासी। मालाफूल बतासा अच्छत पूजो राम रमासी॥चलु०॥२॥ बरणों संगम बिष्णुपदारन धुंधराज घटवासी। जाइके पूजो कपिल मुनिके पग देत भक्ति गुणरासी ॥ चलु० ॥ ३ ॥ शिवपुरमें हरि आपु बिराजें पंडवन संग निवासी।बेनो माधव नाम कहाये ताहि जपो घटवासी । चलु०॥४ ।तिरलोचनतिहुँपुर में बिराजै पाप संकटा नासी । ब्रह्मनाल भागीरथ गंगा विश्वनाथ रह वासी ॥ चलु० ॥ ५ ॥

॥ ठुमरी ताल खेमटा ॥

नई रे घंघुट तर हायरे निगोड़ी ॥ ध्रु० ॥
आंगन में बहुवर बरकरती, बाहर न देती दिखाई रे॥निगोड़ी० ॥
श्रवन से पैठे बदन से निकरे, चुटकिन सान बुझाई रे॥ निगोड़ी०॥
आंख मूँद पट उलटे गगन चढ़ि,मनमुनि ध्यानलगाईरे ॥निगोड़ी०॥
कहहिं कबीर लखो गति वाकी, कविराने नाच नचाई रे॥निगोड़ी०॥

॥ रागनट ॥

आतम खसम रांड भव धनिया । झूठ खसम मन भावत रे ॥ ध्रु० ॥ सीखे सीखे गुरु झूठ जगतमें झूठे कान फुकावतरे । सांच खसमसे कोई न हिनावे झूठ खसममन आवतरे ॥ आतम खसम० ॥१॥ झूठे शब्द झूठे सौदागर झूठे हाटलगावतरे। पूरा पसेरी कबहुँ नहिं देखा सब कोई हाट तौलावतरे ॥ आतम खसम० २॥ सांच कहत बकवाद बढ़ावत तुरते तमकिउठिधावतरे। पगतो हीन पदोतो दीन है पवन कुशल किमि पावतरे ।आतम खसम० ॥३॥ वेद पुरान कुरान किताबा निरखि निरखि निरमा-गतरे । आपहिं आप जरे जग सारा आपहिं आग उठावतरे ॥ आतम खसम०॥४॥बांस रगड़ जैसे अग्नि उठत है उलटे बांस जग-वतरे । कहत कबीर सुनो भाई साधो बिन गुरु कौन लखावतरे ॥ आतम खसम रांड भव धनिया० ॥

॥ लावनी निर्गुण (बनारसी)

ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मामें हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर ।
शिव शङ्कर में शक्ति शक्ति में सृष्टि सृष्टि में उसीका घर ।
घरमें जन्म जन्म में बालक बालक में हैं मनमोहन ।
मनमोहन में मोहनी मोहनी में रस रसमें भोलापन ।
भोलेपनमें खेल खेल में खुशी खुशी में नन्दनन्दन ।
नन्दनन्दन में राधे राधे में सखियां सखियों में लगन ।
लगन में प्रेम प्रेम में प्यारी प्यारी में सोलह लक्षण ।
लक्षण में शोभा शोभा में रूप रूपमें चन्द्रवदन ।
चन्द्र दन में श्याम श्याम में सुन्दर सुन्दर में वह चमक ।

दमक में कृष्ण कृष्ण में दामोदर ब्रह्म में ब्रह्मा।
ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णु में शिव शंकर ॥ १ ॥
दामोदर में दया दया में धर्म धर्म में रहे सुमत।
सुमत में सुख और सुखमें सम्पति सम्पति में है सारा जगत्।
जगत् में थल और थल में पृथ्वी पृथ्वी में आकाश रहना।
आकाश में पवन पवन में अग्नी अग्नी में पांचो तत्त्व।
तत्त्व में त्रैगुण त्रैगुण में है तीन लोक लोकों में सत्त्व।
सत्व में सारा विश्व विश्व में रचना रचना में है भक्त।
भक्तमें भाव भाव में साधू साधू के मनमें ईश्वर।
ईश्वर में इच्छा इच्छा में रहित रहित में रहे अमर।
ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णु में शिव शंकर।
अमर में आदि आदि में आतम आतम में है आतम ज्ञान।
ज्ञानमें गोविन्द गोविन्द में गिरिधर गिरिधर में हैं श्रीभगवान।
भगवान में निर्गुण निर्गुण में है सगुण सगुणमें ह्वै सुध्यान।
ध्यान में योग योग में योगी योगीके मनमें विज्ञान।
विज्ञान में चैतन्य और चैतन्य में चित्त चित्त में प्रान।
प्रानमें जीव जीवमें जपतप जपतप में है यज्ञ औ दान।
दानमें मान मानमें आदर आदर में हैं हरि औ हर।
हर में उमा उमा में लक्ष्मी श्री लक्ष्मी में चरा अचर।
ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णु में शिव शङ्कर।
चरा अचर में वीर्य वीर्य में वृक्ष वृक्ष में भग है जल।
जलमें शाख शाख में पत्र हैं पत्र में पुष्प पुष्प में फल।
फलमें रस और रसमें अमृत अमृत में है स्वाद अटल।
अटल में अलख अलख में माया माया में है वह निर्मल।

निर्मल है शुद्ध शुद्ध में बुद्धि बुद्धि में है उज्ज्वल।
उज्ज्वल में उपमा उपमा मे शान्त शान्त में बडा है बल।
बल में बीर बीर में योद्धा योद्धा में है जोरावर।
जोरावर में बनारसी और बनारसी मे परमेश्वर।
ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णु में शिव शङ्कर।

॥ भजन ॥

ऊधोजी हरि बिन कछु न सुहायो ॥ टेक ॥
जैसे रवि शशि उदय नहीं हैं अंधकार रहे छायो ॥
श्याम बिना मन्दिर है सूनों देखत मन घबरायो ॥१॥
करिके काल गये परसों की सो परसों नहिं आयो ॥
झूटो कौल करो हरि हमसों कुबजा के मन भायो ॥ २ ॥
जैसे जलबिन सूखे मछरिया तड़फत प्राण गमायो ॥
तैसे बिकल बिरह में गोपी तन मन सब कुम्हिलायो ॥३॥
ऊधो जाउ कहो उन हरिसों क्यों गोपिन तरसायो।
श्याम सुन्दर पर दया बिचारी सब सुख हैं सरसायो ॥४॥

॥ भजन ॥

त्रिभुवन पतिको नाम त्याग धन के मदमें अटिलाते हैं।
साध संत और भाट भिखारी तिनसों गाल बजाते हैं॥
गणिकन संग केलि मूरख करि मुफती माल लुटाते हैं॥
भजन भाव सों रूबजन भाजत नेक ध्यान नहिं लाते हैं॥
जब यमदूत घेर कर ठाढे कर मलमल पछिताते हैं॥
अब नहिं बचत बनाय जतन सों निजकर बदन छिपाते हैं॥
श्याम सुन्दर जो भजन में चूकैं सो नर गोते खाते हैं॥

॥ ठुमरी झंझौटी ताल जलद ॥

निरदई श्याम से नैन लगी जल भरन भूलगई गागरिया ।
टेढ़ी शिर पर लटैं बगरैं तन साँवर गावत गागरिया ॥
मोहिं देखि भभूत चलाइ दिया तबसे चित चैन न नागरिया ।
इतछैल के छौ रस्ते न रुकी भारी डर है उत सासुरिया ॥
इतहूंसे गई उतहूं से गई बदनामि लई शिर गागरिया ।
पियनेह के कारण छौंडि दिया सारे घर लाज उजागरिया ।
बदनामि उठाइ केश्याम सखे रसियासे मिली गरेलागरिया

॥ ठुमरी झंझौटी ताल जलद ॥

पनिघट पर हमको मोहि लई दशरथके प्यारे साँवलिया । जल भरत धरत कटि करकि गई सरकत सारी सरकगई निरखत छबि घूंघट उघारि गई चित चंचल ज्यों भई बावरिया ॥ फिर सँभारत धरि धरि शीश घड़ा मन मोहन बालम नजर पड़ा दृग लागत चौगुन चाह बढ़ी सुधि भूलि गई घर गांवरिया । धरि खींचि लई पिय पीत पट मानो दामिनि संग मेघ घटा बिनुमोल बिकी हम श्याम सखे पियके संग दीन्ही भांवरिया ॥

ॐहनुमताय नमः ।

॥ अथ हनुमतऽष्टकनिगद्यते ॥

कपि जुग पिंगल नयन वरं । श्रुति कुंडल चारु कपोल वरं ॥
रघुनाथ कथा रसिकं विमलं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ।
कन कारुन भीषन भीम तनुं । विगसत्तरुशैल गदाधनुषं ॥
मुख पंकज पंच मनोहरनं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
सुर मंडन विश्व भयं समनं । परमं तं सुराम कथा रमनं ॥

सुर वंदित ब्रह्म शिवादि तनुं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
धृत शूकर सिंह सुपर्ण मुखं । हय मद्भुत बानर विश्वसुखं ॥
कृत नाशन तारक विश्वभयं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
भव दीप सुधा त्वरितार मितं । कृत मानसराग नमीसु दितं ॥
नहिं सिद्धि मनोरथ तस्य भवं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
हरि मर्कट हिंमिति मंत्र परं । एतमेव जपे यदि नित्य नरं ॥
भव भूपतिं भूति करोतिचयं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
नवरात्रि लिखे यदि दस्तवकं । शुभवास सहोम जपादि युतं ॥
अपितस्य भवंति सुतं शुभदं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥
इतिऽष्टक श्याम सखा कथितं । पठनाच्च वणाच्छुभदं चनृणां ॥
नर वीर भवे प्यससा विजयं । प्रणमामि हनूमत पाद युगं ॥

॥ रेखता ॥ (तानसेन कृत)

हर वक्त मेरे दिल पै ओ पेश नज़र तूं ।
क्या जादू चला मोपै गया श्याम सुन्दर तूं ॥ ध्रु० ॥
बौरान सभी चरते हैं जंगल के पखेरू ।
जब बंशी बजाता है मगर होठों पै धर तूं ॥ १ ॥
यशोदा का दही खागया मुसका गया मोहन ।
क्या हमने दिया कम दही मत ज्यादा जिदकर तूं ॥ २ ॥
चिसका जो दधी का पड़ा है श्याम सुन्दर को ।
पर अब तो पकड़ पाया मगर जावे किधर तूं ॥ ३ ॥
ऐसा न हुआ ब्रज में कोई छैल छबीला ।
अनोखा हुआ छैल छैल नन्दके घर तूं ॥ ४ ॥
हैरान मियां तान तेरे शैर पै मोहन ।
कि रस्ते चला जाता है इसदिल के अन्दर तूं ॥ ५ ॥

॥ पुरबी ॥

जग अपार यह सार समुझ शिवनाम सजीवन मूरे॥टेक॥
नाम से धाम मिले हरि हरको पापहोत सब दूरे।
नाम से जीव अचल पद पावत सुख संपति भरपूरे॥
कलि में नाम समान कछु नहिं भक्ति ज्ञान को मूलरे।
ऐसे शिव पद जानि बिसारत तिनके करम की भूलरे॥
पर निन्दा पर नारि न हेरत तेई जगत में सूरे।
ऐसे संत मिलें जब मोको लैहौं चरन की धूरे॥
देवी सहाय भजन के कीन्हें भाग भयो अति भूरे।
अब मति सोच करो मन मेरे शिव मिलि जै हैं जरूरे॥

॥ केदारा ॥

तुम झूंठी ब्रज भर में गोरी ॥ टेक ॥
कब रोकी गोपिन की गागर कब माखनकी कीन्ही चोरी।
कब हम गाय चरावत डोले कब हम गाय दुही है तोरी ॥तुम०॥
कब हम चीर हरे गोपिन के कब नटवर को भेष धरोरी।
श्याम सुन्दर सब झूंठहि बोलत कबजमुना अहिराज नथोरी॥

॥ भैरवी ॥

का नर सोवत मोह निशा महँ जागत नाहिं कान निशाना ध्रु०॥
प्रथम नगारा श्वेत केश भौ दूजे श्रवण सुने नहिं काना॥
तीजे नेत्र दृष्टि नहिं सूझै आइ गयो साहब परवाना॥का नर०॥
हाथी छूटा घोड़ा भी छूटा छूटि गये सब माल खजाना।
भ्राता छूटा बनिता छूटी छुटि गये सब जगत जहाना॥का नर०॥
जरिगा शहर बार नहिं लागी दुनियाँ होगई स्वप्न समाना।
भगवतदास यही गति सबकी भजिलेहु सन्तो श्रीभगवाना॥का नर०॥

॥ जैजैवन्ती ॥

आली सियावर कैसा सलोना ॥ ध्रु० ॥

कोटि मदन तन रूप निछावर, देखें च जो सखि बाल दिठोना ॥ आ० ॥
डगर डगर में जिया डरपतु हैं कोउ सखी कर देत न टोना ॥ आ० ॥
अबतो जाइ ललकि उर लगिहौं, रहिहौं न रीन्हें जो मोहिं भरि सोना ॥
जनक नगर में कहर पड़ा है, छुटोगी खान पान नित सोना ॥ आ० ॥
श्री रघुराज मुकुट वारे पर, अब तो मोहिं फकीरिनि होना ॥ आ० ॥

॥ चैत ॥

निरखत भइ भोर मोरे रामा हो । चैता की चाँदनी रतिआ ॥ ध्रु० ॥
ई दूनों नैना बने हैं चकोर । मोहन शशिकर जोत ॥ मोरे० ॥
दास बुलाकी कहत करजोरे । बिरहिन मन दुख होत ॥ मोरे० ॥

॥ चैत ॥

फलगू अस्नान मोरे रामा हो । मोरे संग चलहु न गोरिया ॥ ध्रु० ॥
गया में गदाधर पूजूं । काशीमें विश्वनाथ ॥ मोरे रामा हो० ॥
प्रयाग में माधोजी पूजूं । झारखण्ड में बैजनाथ ॥ मोरे रामा हो० ॥
मन्दराज में मधुसूदन पूजूं । उड़ेसा में जगन्नाथ ॥ मोरे रामा हो० ॥
सेतबंध रामेश्वर पूजूं । द्वारिका में यदुनाथ ॥ मोरे रामा हो० ॥
दास बुलाकी कहैं करजोरी । करहु कृपा रघुनाथ ॥ मोरे रामा हो० ॥

॥ बिलावल ॥

भजे बचलूं हो राम दोहैये भजे न चलूं । अपने सैंयाँ पर न चलूं हो ॥ ध्रु० ॥
नौ मन कोदई खलूं छिपाय । मधुरा दहिजरा दीहल दिखाय ॥ भ० ॥
सासु के बेटा ननदिया के भाय । नाक मोरी काटल भौंहा खिराय ॥ भ० ॥
नाक मोर काटल हो गैल सून । चरलूं मैं सास ननदिया के पून ॥ भ० ॥
मोरे नैहरवा सहोदर जेठ भाय । धन रूठी नाक यो गो बेसर गढ़ाय ॥ भ० ॥

नाम मोर न छूटी कलह की ओर । छोड़ा पूत भतरा नछोड़े कोर ॥भ०
कहैं कबीर मन मुङ्गरी गढ़ाव । एक एक न छूटी को दो दो लगाव ॥भ०॥

॥ बिलावल ॥

मैं रघुबर सङ्ग जायब माई ॥ ध्रु० ॥
बनमें जायब बन फल खायब । बनहीमें विपति गँवायब माई॥मैं०॥
थाकल ऐहैं चरण धोई पीबू । शीतल बेनियां डोलायब माई॥मैं०॥
रेशम की डोरी हाथ कमण्डल । अपने भरि नेह लायब माई॥मैं०॥
लछिमन जैहैं कन्द मूल लैहैं । मैं बहु भांति बनायब माई॥मैं०॥
तुलसीदास प्रभुके दरशको । हरिके चरण चितलायब माई॥मैं०॥

॥ ठुमरी ताल झंझोटी ॥

लजानी रसमाती गोरी चलत अंगनैया ॥ ध्रु० ॥
तनपति हरषि सवांरि बदन श्रुति कनक तोल सोरी ।
जलधिज जलधिज सींचि मनोहर मुख पंकज मोरी ॥
सुनत चारु चरचा विहसानति गो वृषभ तोरी ।
मधवारन दुति हेरि फेरि ठग बोले श्रुतिजोरी ॥
मंगल जननि ध्यान धरे लखती कारुइ रस घोरी ।
दुरजन लखत उचित समय मधु सासु ननँद चोरी ॥
श्याम सखे छवि आन बिरावो फिरिफिरि नारा चोरी ।

॥ बिहाग ताल जती ॥

चलु सखी पौढ़े राजकिशोर ॥
कनक भवन के ललित भवन में द्युति दामिनि छविजोर ।
जनक लली चरनन पर लोटत रस बस करि घन घोर ॥
महलन में मञ्जीर अलापे मधुरी तानन मोर ।
श्याम सखे सखि पीत पिताम्बर लै आई बड़े भोर ॥

॥ ठुमरी ॥

रसमाते मोरा जोगिया रे जगाये न जागे ॥
एक बटछांह दुसरी पुरवैयारे मिठी भँगिया से पागे ॥
गनपति खेंचि धरत जर दाढ़ी धरि मुख चुम्बन लागे ।
श्याम सखे नित सेइयों वरदानो से मांगे ॥

॥ झंझौटी ताल जती ॥

गिरिजा शिव ध्यान सँभारं ।
आसन लाय जोग धरि बैठी चहूँदिशि पलक न टारं ।
भोजन पवन तपति पचग्नी शिव शिव नाम अधारं ॥
सुता विलोकि हिमाचल रानी नैन बहै जलधारं ।
वेगिहिं विप्र पठायउ नापित खोजन जोग कुमारं ॥
फिरत फिरत गिरिमेरु भुलानो देखा शिव करतारं ।
कोटि काम छबि शिव मुख सुन्दर चौदह बरष कुमारं ॥
द्विजकर जोरि अछत दधि लावत शिव सिरतिलक सँवारं ।
जनु शशि छीन पीन हित कारन पूरन चन्द्र खिलारं ॥
शोचत विप्र काह मोहिं दैहैं नहिं घर सहन भँडारं ।
भरि भरि भमुति चले मग शोचत नापित भूमि पँवारं ॥
द्विज गठरी मनि मानिक देखत नापित सिरकरि मारं ।
बहुरि मोट भरि बान्हि गठरिया निजघर कहँ पगु धारं ॥
सुनि हिमि नृप मन हर्ष भये हैं बजत अनंद नगारं ।
देखि बरात मध्य एक बूढ़ा गो सुत पर असवारं ॥
श्याम सखे गिरिजा समुझावति परिखहु शिव अवतारं ।
सो नहिं मिटै लिखा बिधि माई जो कछु करम हमारं ॥

॥ राग सारंग ॥

आजु बनी छबि गोप कुमारी ॥
बहु विधि चिकुर सुगंध सुहावत मुख मयंक पर शशि बलिहारी ॥
मीन हिरण छबि दृगन दुरावत खंजन आरत करत पुकारी ॥
शुक नाशा को मित्र सीय सुत मृदुल वचन कोकिला हारी ॥
अधर बिम्ब विद्रुम चुनि राखे ग्रीवा लखि मयूर मनमारी ।
चकवाक सरवर कुच आली बैठ करें मिलके सुखभारी ॥
गति गजेन्द्र हंस को लाजै चरण पाणि अंबुज छवि हारी ॥
ऐसो विधि ने रची कामिनी त्रिभुवन की छबि आपुन धारी ।
श्याम सुन्दर यह चपल चुटपुटी सब गोपिनमें है सुकुमारी ॥

॥ राग बड़हंस ॥

मोहि नंद घर लेचलरे, ढाढिनियां मचल रही ।
पुत्र भयो सब जगने जान्यो, मोते क्यों न कही ॥
मोहिं मिले नख शिख सों गहनों, लाऊँ तो बात सही ॥
जरदोजी के वस्त्र मिलेंगे, फरिया चोली नई ॥
कृष्ण कृपा बिन को या जगमें जिन मेरी बांह गही ॥

॥ राग जोगिया ॥

योगिया भोर भये बृज आवे । खिये बैल गैलमें डोलै शैल निवास बतावै ॥ जटिलो गंग भुजंग लिपट शिर बालक वृन्द डरावै ॥ केहरि छाल माल मुण्डन उर भाल मयंक सुहावै ॥ नैन तीन तन भस्म लगाये नीलकंठ छवि पावै ॥ कर डमरू त्रिशूल विराजे सिंगीनाद बजावै ॥ पब्बत फिरत नन्दको मन्दिर मोहन गुण गण गावै ॥ हरि विलास उर हारि दरसहित अपनो नाम छिपावै ॥

॥ भजन ॥

तुम्हरे बीरन को संकट है, तिन ढिग लक्ष्मण जाय ॥ टेक ॥
सुनत बचन सीता के लक्ष्मण, कहैं बचन समुझाय ॥
तुम्हरी रखवारी मोहिं देगे, तुम तज हम कस जाय ॥
जा बन कारण कौन बन्धु ढिग, दुबिधा मोहिं दिखाय ॥
मर्म बचन सीता के सुनके, लक्ष्मण रहे सकाय ॥
यहँ सीता वहँ राम अकेले, निश्चर फिरैं समुदाय ॥
जाउँ न जाउँ बने कैस्यो नहिं, करौं अब कौन उपाय॥
करा विचार मढि घेरी लक्ष्मण, रेखा चीन बनाय ॥
काशीदास चले लखन प्रभु ढिग, जात मनहिं पछताय ॥

॥ भजन ॥

रघुवर लखन न आये बनसे, सिय मनमें घबराय ॥
सूनीकुटी जान यहँ रावण, यति को भेष बनाय ॥
सिय ढिग जायके अलख जगायो, भिक्षा मुख से मँगाय ।
सुन यती बचन जानकी निकसी चली देवे हरषाय ॥
लेव अतिथ जाव घर अपने, जानकी बचन सुनाय ॥
देव न लेय पापी खल रावण, रेखा देख डेराय ॥
बँधी भीख कह नाहीं लैहौं लैहौं तो धर्म नशाय ॥
रेखा बाहर सुन सिय आई, लेव योगी मन भाय ॥
काशीदास उठ रावण सीतहिं, रथपर लई बैठाय ॥

॥ आरती राग गौरी ॥

आरती श्री रघुपति यदुपति की, सीतापति औ नन्द कुँवरकी ।भु०॥
रघुपति संग सिया महरानी, यदुपति संग राधा ठकुरानी ॥
रघुपति हाथ धनुष सर सोहै, यदुपति हाथ मुरली मन मोहै ॥

रघुपति नारि अहिल्या तारी. यदुपति पुतना को संहारी ॥
रघुपति लंका में रावण मारे, यदुपति मथुरा कँस पछारे ॥
तुलसिदास प्रभु के गुण गाये । रघुपति यदुपति चरण मनाये ॥ १ ।

॥ राग बिलावल ॥

अब बढ़ भोर जनकपुर जाना ॥ ध्रु० ॥

सजी नालकी सजी पालकी सजि गये माल खजाना । गज कंचन मय मैं असवाग राजा दशरथ जी को उड़त निशाना ॥ अब बढ़ भोर० ॥१॥ कौनपुरी से चली बराता कौन पुरीको जाना । कौन बागमें डेरा परिगौ कौन राजा को उड़त निशाना ॥ अब बढ़ भोर० ॥२॥ अवधपुरी से चली बराता जनक पुरी को जाना । लाल बाग में डेरा परिगौ राजा दशरथजी को उड़त निशाना ॥ अब बढ़ भोर० ॥३॥ बीच सभामें खड़ी जानकी हाथलिये जयमाला । राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन राम गले सिय दिये जयमाला ॥ अब बढ़ भोर० ॥४॥ लाय पालकी द्वार लगाये सखि सब मंगल गाये । तुलसीदास भजो रघुबर को जनक नगर में बजत बधाये ॥ अब बढ़ भोर० ॥ ५ ॥

॥ आरती राग गौरी ॥

आरती युगल किशोर की कीजै । तन मन धन न्योछावर दीजै ॥ ध्रु० । गौरश्याम मुख निरखन कीजै । हरिके स्वरूप नैन भरिलीजै ॥ आरती० ॥ रविशशि कोटि बदन की शोभा । ताहि निरखि प्रभुमेरो मन लोभा ॥ आरती० ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै । नटवर कला देखि मन मोहै ॥ आरती० ॥ नंदनँदन बृष भान किशोरी । परमानन्द स्वामी आरति जोरी ॥ आरती० ॥

❋ इति शुभम ❋

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित ।

* सूचीपत्र *

केसर गुलाब	।)	तिलस्मी मछली	≡)
चालाक मालिन	।)	चम्पा चमेली	)॥।
सवायार	॥)	चमेली गुलाब	―)
तोता मैना	॥।=)	दिल्लगी का भण्डार	―)
अलीबाबा ४० चोर	=)	सारंगा सदावृक्ष बड़ा	॥)
साढ़े तीन यार	१)	अफीमची	―)॥
हातिमताई	१)	मक्खीचूस	)॥
बैताल पचीसी	।―)	भूखा मसखरा	)॥
नलदमयन्ती सचित्र	॥)	गुल सनोवर	=)॥
गुलबकावली	।=)	पुतबुलाखी	=)
सिंहासन बत्तीसी	॥)	फिसाना अजायब	=)
लैलामजनूं	=)	सिपाही जादा	=)
किस्साशाहरूम	)॥।	अचम्भे का बच्चा	=)
सौदागर बच्चा	)॥	रात की गहरी वारदात	―)
किस्सा हट्ठा	=)	प्राण प्यारी	―)

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर-सार्वजनिक पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस सिटी।